आज़ादी का अमृत महोत्सव

प्रवेशांक-2022

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्या०-2), प्रयागराज

त्रिवेणी प्रवाह

"हिंदी उन सभी गुणों से अलंकृत है
जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक
भाषाओं की अगली श्रेणी में
सभासीन हो सकती है।"

–मैथिलीशरण गुप्त

संपादक मंडल

त्रिवेणी प्रवाह

संरक्षक

प्रो0 रमा शंकर वर्मा
निदेशक, मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान इलाहाबाद
एवं अध्यक्ष, नराकास (कार्या0-2),प्रयागराज

प्रधान संपादक

डॉ0 सर्वेश कुमार तिवारी
कुलसचिव, मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान इलाहाबाद
एवं सदस्य सचिव, नराकास (कार्या0-2),प्रयागराज

संपादक

श्री आरिफ हुसैन रिज़वी, सहायक निदेशक
केन्द्रीय संचार ब्यूरो, फील्ड कार्यालय

श्री राजीव कुमार तिवारी
प्राचार्य, के0 वि0 ओल्ड कैण्ट

श्री विश्व प्रकाश
पूर्व क्षेत्रीय निदेशक , दन्तोपंत ठेगड़ी राष्ट्रीय
श्रमिक शिक्षा एवं विकास बोर्ड

श्री अनिल कुमार सिंह
पूर्व क्षेत्रीय निदेशक, राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

श्री गोविन्द दुबे, प्राचार्य
केन्द्रीय विद्यालय, सीआरपीएफ फाफामऊ

डॉ0 अरूण कुमार सिंह
केन्द्रीय विद्यालय, इफको फूलपुर

श्री राम नरेश तिवारी
केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद

श्री ज्ञानेन्द्र कुमार तिवारी
सहायक कुलसचिव, एम.एन.एन.आई.टी. इलाहाबाद

श्री प्रकाश चन्द्र मिश्र
हिन्दी अधिकारी, एम.एन.एन.आई.टी. इलाहाबाद

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं एवं लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण रचनाकारों के अपने हैं।
जिसके लिए संपादक मंडल उत्तरदायी नहीं है।

त्रिवेणी प्रवाह

अनुक्रमणिका

- **निदेशक एवं अध्यक्ष का संदेश** 01
- **कुलसचिव एवं सदस्य सचिव का संदेश** 02
- **नराकास (कार्या-02), प्रयागराज के बढ़ते चरण** 03

शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ सं.
1. भारत के विकास में भारतीय संस्कृति का योगदान एवं राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, प्रयागराज द्वारा संस्कृति के संरक्षण हेतु अद्भुत प्रयास	अर्चना पंत	04
2. कोरोना	डा० नितिषा श्रीवास्तव	07
3. माधव जी–प्रेरणा स्रोत	सुश्री मीरा शुक्ला	08
4. राजभाषा की उपयोगिता	राम नरेश तिवारी ''पिण्डीवासा''	09
5. ऑनलाइन हिंदी शिक्षण : चुनौतियाँ . और संभावनाएँ	डॉ चंद्रमौलि त्रिपाठी	14
6. भाषाभिव्यक्ति .	डॉ0 चंद्रमौलि त्रिपाठी	17
7. पानी है अनमोल	इच्छा चतुर्वेदी	17
8. रुला गया हर घर को ये कोरोना काल	आनन्द प्रकाश श्रीवास्तव	18
9. नर हो, न निराश करो, मन को	विजयेश पाण्डेय	19
10. पापा की परी हूँ मैं	विवेक कुमार मिश्र	20
11. दत्तोपंत ठेंगड़ी राष्ट्रीय श्रमिक शिक्षा एवं विकास बोर्ड– एक परिचय	विश्व प्रकाश	21
12. पैलिन्ड्रोमिक संख्यायें	डॉ0 पुनीता बत्रा	26
13. (i) जला दो एक दीप (ii) परिवर्तन	डॉ0 संपूर्णानंद मिश्र	27
14. इन नयनों को मैं जाम लिखूँ (गीत)	नीलिमा मिश्रा	28
15. वीरांगना दुर्गा देवी : एक प्रेरणा स्रोत	संजीव नागर	29
16. हिन्दी कविता (क्षणिकाएं)	नवीन कुमार श्रीवास्तव	30
17. ''श्रद्धांजली'' शहीदों को नमन्	जितेन्द्र कुमार चतुर्वेदी	31
18. माँ की ममता	प्रेमचन्द्र	31
19. वर्तमान परिपेक्ष्य में हिन्दी की स्थिति	वंदना सिंह	32
20. सड़क	मंजू तिवारी	33
21. वंदना	डॉ. मुकेश कुमार	34
22. अहंकार	वीरेन्द्र प्रसाद	35
23. वृद्ध आश्रम में कुछ पल	पुष्पेन्द्र सिंह	37
24. माँ	इंदिरा सिंह	37
25. फेसबुक दोस्त (सोशल मीडिया)	वीरेन्द्र प्रसाद	38
26. जीवन का अविस्मरणीय वृतान्त / संस्मरण	पुष्पेन्द्र सिंह	40
27. (i)गुरु–शिष्य (ii) हकीकत	मनीष मिश्र	41
28. जानिए पाई को	डॉ0 मनोज कुमार	42

प्रो0 रमा शंकर वर्मा
निदेशक, मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान इलाहाबाद
एवं
अध्यक्ष
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति प्रयागराज (कार्या0–2)

अध्यक्ष की कलम से...

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति प्रयागराज (कार्या.–02) की राजभाषा पत्रिका **"त्रिवेणी प्रवाह"** का प्रवेशांक आपको सौंपते हुए मुझे आत्मिक प्रसन्नता हो रही है।

हिंदी हमारे देश की राष्ट्रीय एकता और अस्मिता का प्रभावी और शक्तिशाली माध्यम रही है। हिंदी की वैज्ञानिकता, सरलता, सुबोधता स्वीकार्यता और सर्वग्राह्यता को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा में हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया गया। संघ की राजभाषा नीति के अनुसार राजभाषा संबंधी अनुदेशों का पालन करना हम सभी का संवैधानिक दायित्व है। नराकास (कार्या.–02) प्रयागराज इन दायित्वों का निर्वहन करते हुए राजभाषा हिंदी के उन्नयन के लिए समर्पित भाव से कार्य कर रही है।

मैं सभी सदस्य कार्यालयों से आग्रह करता हूँ कि अपने–अपने कार्यालय में सरल हिंदी के प्रयोग के लिए अनुकूल और उत्साहवर्धक वातावरण बनाएं जिससे सभी अधिकारी/कर्मचारी टिप्पणियाँ, मसौदे, पत्राचार मूल रूप से सहज हिंदी में करने के लिए प्रेरित हों।

हमारी न.रा.का.स, भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा जारी दिशा–निर्देशों का समुचित अनुपालन करते हुए राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए निरंतर अग्रसर रहेगी। मुझे पूर्ण विश्वास है कि सभी सदस्य कार्यालय निर्धारित लक्ष्यों को कार्यान्वित करने के लिए अपनी ओर से पहल करते हुए सक्रिय सहयोग प्रदान करेंगे और हम इस समिति को अधिक ऊँचाई तक ले जाने में सक्षम बनेंगे।

न.रा.का.स प्रयागराज (कार्या.–02) की **"त्रिवेणी प्रवाह"** पत्रिका सदस्य कार्यालयों के समन्वयन का ही एक प्रतिबिंब है। इसके लिए प्रकाशन कार्य से जुड़े संपादक मंडल और प्रतिभाशाली रचनाकार बधाई के पात्र हैं।

मैं आशा करता हूं कि आप सभी इसी तरह राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में उत्तरोत्तर प्रगति करते हुए अपने कार्यालय, न.रा.का.स प्रयागराज (कार्या.–02) एवं राजभाषा गृह पत्रिका "त्रिवेणी प्रवाह" का मान बढ़ाते रहेंगे।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

(प्रो0 रमा शंकर वर्मा)

डॉ0 सर्वेश कुमार तिवारी
कुलसचिव, मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान इलाहाबाद
एवं
सदस्य सचिव, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति प्रयागराज (कार्या0-2)

संपादकीय

''त्रिवेणी प्रवाह'' पत्रिका के समस्त पाठकों को मेरा हार्दिक अभिनन्दन।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति प्रयागराज (कार्या.–02) की राजभाषा पत्रिका 'त्रिवेणी प्रवाह' के प्रवेशांक के माध्यम से आपके साथ जुड़ते हुए अत्यंत आनंद की अनुभूति हो रही है।

हमारी नराकास संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करते हुए सभी सदस्य कार्यालयों में राजभाषा नीति का अनुपालन करते हुए राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में नए मुकाम हासिल करने में निरंतर प्रयासरत है। नराकास (कार्या.–02) के सदस्य कार्यालयों ने राजभाषा हिंदी के प्रति जो निष्ठा दिखाई है वह अत्यंत सराहनीय है।

कार्यालय स्तर पर हिंदी में लेखन को प्रोत्साहित एवं प्रेरित करने के लिए हिंदी गृह पत्रिकाओं का एक विशेष महत्व है। 'त्रिवेणी प्रवाह' के प्रवेशांक का प्रकाशन भी एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है, जिसके लिए संपादक मंडल बधाई के पात्र है।

'त्रिवेणी प्रवाह' पत्रिका में वर्ष के दौरान आयोजित विभिन्न राजभाषा गतिविधियों की झलकियाँ शामिल हैं। पत्रिका में तकनीकी विषयों के साथ ही साथ कविताएं, कहानियां, संस्मरण से जुड़ी रचनाएँ भी सम्मिलित की गई हैं। आशा है कि आपको सभी लेख बेहद पसन्द आएंगे।

नराकास कार्यालय (कार्या.–02) के सदस्य कार्यालयों से अनुरोध है कि अपने कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में उत्तरोत्तर प्रगति करने के साथ–साथ नराकास की गतिविधियों में सक्रिय योगदान देते हुए राजभाषा गृह पत्रिका 'त्रिवेणी प्रवाह' को अपनी उत्कृष्ट रचनाओं से अलंकृत करते रहें।

'त्रिवेणी प्रवाह' के संपादक मंडल व सभी रचनाकारों को हार्दिक धन्यवाद।

01/09/22

(डॉ0 सर्वेश कुमार तिवारी)

प्रकाश चन्द्र मिश्र
हिन्दी अधिकारी, मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान इलाहाबाद

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्या.-02) प्रयागराज के बढते चरण

राजभाषा नीति का अनुपालन एवं हिंदी की सेवा हमारे लिए गौरव का विषय है। मुझे यह बताते हुए अति प्रसन्न्ता हो रही है कि नराकास (कार्या.–02) ने विगत वर्षो के दौरान राजभाषा के उन्नयन एवं विकास के लिए उल्लेखनीय कार्य किया है, जो संस्थान के लिए गौरव के क्षण है।

संस्थान ने राजभाषा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता का परिचय देते हुए कोरोना जैसी वैश्विक महामारी के बावजूद, विगत वर्षो के दौरान नराकास की सभी बैठकें निर्धारित कलेण्डर माह में ही आयोजित किया। बैठकों के कार्यवृत्त, सूचना प्रबंधन प्रणाली पर यथासमय अपलोड किए गए।

नराकास की पिछली सभी बैठकों (आनलाइन/आफलाइन) में ज्यादातर कार्यालयों ने सहभागिता की तथा सभी 35 सदस्य कार्यालयों से प्राप्त छमाही रिपोर्टों की समीक्षा की गयी।

नराकास (कार्या.–02) के सभी 35 सदस्य कार्यालय राजभाषा विभाग के सूचना प्रबंधन प्रणाली के पोर्टल पर पंजीकृत हैं तथा हिंदी तिमाही प्रगति रिपोर्ट पोर्टल पर अपलोड कर रहे हैं।

नराकास (कार्या.–02) ने दिनांक 23.08.2022 को नगर स्तरीय एक पूर्ण दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला में नराकास छमाही रिपोर्ट, हिंदी तिमाही रिपोर्ट एवं राजभाषा संबंधी अन्य रिपोर्टो को ठीक ढंग से तैयार करने की जानकारी दी गई। इस कार्यशाला में सदस्य कार्यालयों के कुल 45 अधिकारियों/कर्मचारियों ने प्रतिभाग किया।

स्पष्ट है, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्या.–02) प्रयागराज राजभाषा के प्रति अपने दायित्वों के निर्वाह के लिए प्रतिबद्ध है तथा माननीय अध्यक्ष एवं निदेशक महोदय के मार्गदर्शन में निरन्तर गतिशील है।

भारत के विकास में भारतीय संस्कृति का योगदान एवं राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, प्रयागराज द्वारा संस्कृति के संरक्षण हेतु अद्भुत प्रयास

अर्चना पंत, युवा महिला वैज्ञानिक
राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, प्रयागराज

'संस्कृति' मानव की मूल अवस्था की एक 'परिष्कृत' अथवा 'विकसित' स्थिति है। मानव जीवन के विकास क्रम के आधार में मस्तिष्क का विकास माना गया है। मस्तिष्क की बौद्धिक क्षमता के आधार पर ही मानव मस्तिष्क को तार्किक मस्तिष्क कहा गया, जिसके फलस्वरूप उसे पशुओं से उच्च स्थान दिया गया। इस विकास के आधार पर मानव द्वारा सर्वप्रथम अपनी मूल भौतिक आवश्यकताओं (भोजन, वस्त्र एवं आवास) की पूर्ति की गई, किन्तु मानसिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु उसने रचनात्मकता/ सृजनात्मकता का विकास किया जिसकी अभिव्यक्ति विभिन्न रचनात्मक आयामों जैसे –धर्म, दर्शन, कला, संगीत विज्ञान आदि के माध्यम से हुई जो कि मनुष्य की सम्यक् कृति (संस्कृति) का हिस्सा बने। मानव की प्रकृति के दो पक्षों भौतिक व अभौतिक (मानसिक) के अनुरूप उसकी संस्कृति के भी दो पक्ष (भौतिक व अभौतिक) बनते हैं। भौतिक संस्कृति में मानव के भौतिक जीवन से जुड़े जैसे विषय भोजन, आवास, वस्त्र, सामाजिक व राजनीतिक संस्थाएं आदि शामिल हैं, तथा अभौतिक संस्कृति में वैचारिक पक्ष प्रबल हैं। अतः इसमें मानव जीवन से संबंधित मूल्य, परंपराएं, प्रथाएं, विचार आदि आन्तरिक अनुभूतियां सम्मिलित हैं। इन्हीं भौतिक व अभौतिक तत्वों को मानव विज्ञान 'मूर्त व अमूर्त' संस्कृति की संज्ञा देता है। इस प्रकार संस्कृति एक व्यापक अवधारणा है। यह मानव जीवन की पद्धति है, जिसकी प्रक्रियाएं व प्रथाएं एक जटिल नेटवर्क के रूप में विशिष्ट मानव समुदाय (समाज) में रहते हैं तथा हस्तान्तरित भी होते है। दार्शनिक समाज सुधारक एवं गायत्री परिवार के संस्थापक आचार्य श्रीराम शर्मा के अनुसार संस्कृति हमारे विचारों व कृत्यों द्वारा ही संचालित होती है और यही तौर–तरीके (मैनरिज्म) सामूहिक रूप से एक समाज की संस्कृति बनते हैं। अतः इन तौर तरीकों (जीवन पद्धति) को परिष्कृत व विकसित करने से ही एक सुसंस्कृति समाज निर्मित होता है। संस्कृति मानव जीवन का आधार है और इसकी प्रक्रियाओं का वैज्ञानिक विश्लेषण संभव है। इस बात की पुष्टि पाषाण कालीन मानव द्वारा पत्थरों में आग जलाने की प्रक्रिया से होती है, जो भौतिक विज्ञान के घर्षण नियम पर आधारित है।

भारतीय संस्कृति के विकास से जुड़े हुए तथ्यों भारतीय समाज का व्यवहार तीन स्तरों, पक्षों पर आधारित है–भौतिक, वैचारिक (मानसिक) एवं आध्यात्मिक (नैतिक)। इनको क्रमशः सभ्यता, संस्कृति एवं संस्कार का नाम दिया गया हैं। हमारे देश की संस्कृति का विकास सभ्यता एवं संस्कारों पर आधारित है। अतः इन तीनों पक्षों के समग्र विकास से ही देश की विकास संभव हो पाया। पाषाणकालीन मानव से लेकर आधुनिक मानव के विकास क्रम में मानव द्वारा जीवन

की आवश्यकताओं को पूर्ण करने हेतु भौतिक उपलब्धियां सभ्यता का अंग है। अर्थात सभ्यता का विकास भौतिकता का विकास है। किन्तु इसका आधार संस्कृति है। सभ्यता, संस्कृति के प्रचार एवं प्रसार में सहायक उपकरण के रूप में कार्यरत है। अतः इनको पृथक नहीं किया जा सकता। संस्कार का अर्थ है अच्छे कार्य जो कि मनुष्य के जीवन के परिष्कृत (शुद्ध) करने हेतु किये जाते हैं। संस्कार के दो पक्ष है– भौतिक(सामाजिक) एवं आध्यात्मिक (नैतिक) भौतिक पक्ष मे वह सभी प्रथाएं/ रीति–रिवाज सम्मिलित हैं जो कि समाज का प्रत्येक वर्ग अपनी नियमावली के अनुसार करता है। तथा आध्यात्मिक पक्ष का विकास मानव जीवन के विकास के साथ–साथ होता है। संस्कारों के संपादन से मनुष्य को समाज में विशेषाधिकार प्राप्त होते हैं।

संस्कारों के अनुरूप ही मनुष्य की संस्कृति का विकास होता है। इन अवधारणाओं की पुष्टि हेतु कुछ सुप्रसिद्ध समाजशास्त्रियों व सांस्कृतिक मानवविज्ञानियों ने अपने विचार व्यक्त किए हैं।

भारतीय संस्कृति का मूल स्वरूप नैतिक/ आध्यात्मिक मूल्यों पर आधारित हैं तथा विश्व की सभी संस्कृतियों के लिए प्रेरणा स्वरूप है। अतः इसे सभी संस्कृतियों की जननी कहा गया है। यह विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में एक हैं तथा मिस्र व मेसोपोटामिया की संस्कृतियों के समकालीन हैं, जिसकी पुष्टि पाषाण– कालीन उपकरणों व आदिमानव द्वारा की गयी शैल चित्रकारी के आधार पर की गई है। हमारी परम्पराओं, मूल्यों, विचारों में परिवर्तन होने के फलस्वरूप इसमें गतिशीलता बनी है तथा परम्पराओं के अनुपालन में भी एक निरन्तरता बनी है। ग्रहणशील प्रवृत्ति होने के कारण यह अनेक वाह्य संस्कृतियों जैसे ईसाई, व इस्लामी संस्कृति को आत्मसात करके उनके अनेक पक्षों का ग्रहण करती है व समन्वय भी करती है। इसका एक लचीला स्वरूप है तथा सहिष्णु प्रवृति है साथ ही समग्रता, सार्वभौमिकता तथा विविधता मे एकता जैसी अन्य महत्वपूर्ण विशेषताएं है, जिनके आधार पर भारत का विकास संभव हो सका। विविधता में एकता एक ऐसी विशेषता है जो इसे श्रेष्ठ व समृद्ध बनाती है। हमारा देश विभिन्न प्रान्तों का देश है तथा धर्म, जाति, भाषा, संगीत कला सभी पक्षों में विविधता है, किन्तु संस्कृति ही इन्हें एकता के सूत्र में पिरोती है। अर्थात सांस्कृतिक एकता के आधार पर ही हमारा देश समृद्ध हो पाया है भारतीय संस्कृति की हमारे देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका है जिसके अन्तर्गत विभिन्न सांस्कृतिक आयामों जैसे धर्म, दर्शन, भाषा, संगीत, साहित्य, योग, कला, ज्योतिष, खगोल विज्ञान, आयुर्वेद का हमारे देश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान है।

भारत के सांस्कृतिक विकास का क्रम भारत के सम्पूर्ण इतिहास पर आधारित है जो एक ऐतिहासिक धारा प्रवाह के रूप मे उभर कर सामने आता है। भारत के सम्पूर्ण इतिहास काल को मुख्यतः तीन चरणों में विभक्त किया जा सकता है। प्राचीन भारत (वैदिककाल), मध्यकालीन भारत, एवं आधुनिक भारत। इन तीनों ही कालों में भारतीय संस्कृति के सभी आयामों का विकास हुआ। प्राचीन भारत में वेदों की रचना, खगोल एवं ज्योतिष शास्त्र तथा धार्मिक साहित्य (हिन्दू धार्मिक ग्रन्थों रामायण व महाभारत की

रचना) का विकास अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा। मध्यकालीन भारत में सांस्कृतिक विकास काफी प्रभावशाली रहा। इस काल में भक्ति आंदोलन तथा सूफीवाद के प्रचार प्रसार द्वारा आध्यात्मिक विकास हुआ। साथ ही मुस्लिम संस्कृति एवं अरबी–फारसी संस्कृति द्वारा कला, अलंकरण प्रयोग, स्थापत्य एवं साहित्य के क्षेत्र में अद्भुत प्रगति हुई। आधुनिक काल के केन्द्र बिन्दु नवजागरण काल था, जिसका उद्देश्य समाज में व्याप्त कुरीतियों, कुप्रथाओं को समाप्त करना था। भारतीय नवजागरण के अग्रदूत के रूप में राजा राममोहन, केशव चन्द्रसेन, दयानन्द सरस्वती द्वारा विभिन्न मठों समुदायों की स्थापना से आध्यात्मिकता, तथा मानवतावाद का विकास हुआ महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानन्द व टैगोर जैसे महान दार्शनिकों के अभूतपूर्व प्रयासों द्वारा नैतिक विकास संभव हो पाया तथा प्रेमचन्द्र महादेवी वर्मा, पंत व गुप्त जैसे साहित्यकारों/कवियों ने साहित्यिक विकास में योगदान दिया। इस काल में मुद्रण कला के विकास ने भाषा विकास में योगदान दिया तथा हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने हेतु प्रयास किया गया।

भारतीय सांस्कृतिक विरासत से जुड़े हुए तथ्य भारतीय संस्कृति के विकसित,परिमार्जित एवं विस्तृत रूप को एक बड़ी उपलब्धि के रूप में दिखाते हैं। भौतिकवाद के विकास से समाज के समक्ष होने वाली चुनौतियों के फलस्वरूप भविष्य में भारतीय संस्कृति का अवमूल्यन तथा मूल स्वरूप में परिवर्तन होना संभव है।

भारतीय संस्कृति के संरक्षण हेतु मुख्य बिन्दुओं में शिक्षा प्रणाली में नैतिक व सामाजिक मूल्यों का समावेश, शिक्षकों द्वारा लोक संस्कृति के संरक्षण हेतु प्रभावशाली शिक्षण, पर्यावरण (प्रकृति) संरक्षण हेतु जागरूकता, तथा सरकार द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों/परियोजनाओं के अर्न्तगत सांस्कृतिक संरक्षण हेतु प्रयास सम्मिलित हैं। इसके अर्न्तगत राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी द्वारा एक परियोजना के अर्न्तगत नदियों से सम्बन्धित दीर्घाओं का निर्माण एक महत्वपूर्ण प्रयास है। नदियां (मुख्यतः गंगा नदी) हमारी संस्कृति से जुड़ी है। अतः इनका संरक्षण हमारा कर्तव्य है। अकादमी द्वारा प्रयागराज, उ0प्र0 (अकादमी परिसर में) में गंगा दीर्घा, असम में ब्रहमपुत्र दीर्घा तथा मैसूर में कावेरी दीर्घा का निर्माण एक सराहनीय व अद्भुत प्रयास है, जिसका उद्देश्य जनमानस में भारतीय संस्कृति के प्रति जागरूकता, नदियों का भारतीय संस्कृति में महत्व तथा नदियों से सम्बन्धित धार्मिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं वैज्ञानिक तथ्यों तथा नदियों के संरक्षण हेतु सामाजिक जागरूकता का प्रसार करना है। अकादमी का यह महत्वपूर्ण कदम भारतीय संस्कृति के प्रति सम्मान एवं संरक्षण की भावना को दर्शाता हैं।

*****

"जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य के
गौरव का अनुभव नहीं है,
वह उन्नत नहीं हो सकता"
– डॉ. राजेंद्र प्रसाद

कोरोना

डा० निति‍षा श्रीवास्तव, वनस्पति सहायक
भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण, मध्य क्षेत्रीय केंद्र, इलाहाबाद

भागकर जाओगे तुम कहाँ?
हर तरफ आक्रांत है
हाहाकार सा है मचा हुआ
भय है चीत्कार करता हुआ
मोल है सब खत्म समय का
प्राणों का बस मोल रह गया
जीवन समय जो अनिश्चित था
अब और भी अनिश्चित हुआ
पूरब से लेकर पश्चिम तक
उत्तर से लेकर दक्षिण तक
हर तरफ है शव कर रहे,
इंतजार अंतिम संस्कार का
अंतिम यात्रा में भी न चढ़ सके
शव स्वजनों के कंधों पर
अंतिम समय यह बिचित्र था
स्वजनों के अंतिम दर्शन भी न हुए
किसने वसुंधरा की सुख–शांति पर
यह कुटिल घात लगाया है
कौन यह अतिसूक्ष्म है
जो है कहर बनकर आया
यह प्रकृति का श्राप है
या मनुज का षड्यंत्र है
यदि प्रकृति का प्रतिकार है
तो भी दोषी मनुज तू ही हुआ
भला कब नहीं रही तुझमें
प्रकृति विजय की कामना
यदि यह षड्यंत्र सिद्ध हुआ
मनुज ही मनुजता का दुश्मन हुआ
अपने निहित कुछ स्वार्थ
मानवता को विष उपहार दिया
एक राष्ट्र से दूजे राष्ट्र में
मानव है मानव बम बना हुआ
पश्चिम तेरी ही आदतों ने
आग में घी सा अर्पित किया
मिलते रहे, घुलते रहे,
किस ज्ञान के अभिमान में
बढ़ती रही शवों की संख्या
गिनतियाँ रोज जुड़ती रही
फिर भी न संयम तुझमें रहा
यह आचरण पशुवत हुआ
संहार के सब साधनों में
लिप्त तू अनुसंधान कर
उद्धार के भी साधनों पर
क्या किसी ने विचार किया?

*****

आज़ादी का अमृत महोत्सव

व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित कहानी लेखन

माधव जी-प्रेरणा स्रोत

मीरा शुक्ला
राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, प्रयागराज

कुछ वर्षो पहले मैं एक व्यक्ति से मिली थी, उनका नाम माधव जी था, वे मेरी मौसी के बेटे के साथ मेरे घर पर आये हुए थे। उनक दोनो हाथ एक दुर्घटना में कट गये थे जो कि अब कोहनियों तक ही हैं। उन लोगों को मैने चाय–नाश्ता दिया, पर मैं असमंजस में थी कि माधव जी चाय कैसे पीयेंगे। पर मैं देखकर स्तब्ध रह गयी कि बहुत ही आसानी से उन्होंने चाय को पी लिया था। उतनी आसानी से और जल्दी से तो हम लोग भी कोई कार्य नहीं कर पाते हैं जितने आसानी से उन्होंने नाश्ते को भी ग्रहण कर लिया था।

बातचीत मे पता चला कि माधव जी एक सरकारी शिक्षक भी हैं और जब भी कहीं भी उन्हें स्वयं सेवक के रूप में कार्य करने का मौका मिलता है तो वे बड़ी ही तन्मयता से सहयोग में जुट जाते हैं।

अभी कुछ महीनों पहले फरवरी 2020 मे मेरी उनसे फिर मुलाकात गॉधी अकादमी में हुई, वहीं पर 21 विकलांग जोड़ो का विवाह समारोह था। वे विवाह की व्यवस्था में स्वयंसेवक के रूप में कार्य कर रहे थे। उन्होनें आम लोगों के ही समान, विवाह कार्यों में पूरी भागीदारी निभाई थी जैसे कि अन्य स्वयंसेवक कार्य कर रहे थे। मैं और मेरे पति दूर से ही उनके कार्यों, दौड़–दौड़ के जरूरी सामानों को पहुँचाते देख रहे थे और आश्चर्य चकित थे। वही बगल में बैठे एक सज्जन हम लोगों को देखकर नजदीक आये और बताया कि माधव जी हर समय परोपकार के कार्यो में लगे रहते हैं। इनका ब्लड ग्रुप 0– है जो बहुत ही दुर्लभ है। माधव जी ने अपने मो0 नम्बर ब्लड बैंको में दे रखे हैं। और जब भी कभी उन्हें बुलाया जाता है वह सारे जरूरी कार्यो को छोडकर ब्लड दान करने पहुँच जाते हैं।

उन सज्जन ने एक बार का माधव जी का किस्सा बताया कि माधव जी बनारस अपनी बहन के यहॉ मिलने गये थे। दोपहर में वहॉ पर पहुँचे ही थे कि उन्हें ब्लड बैंक से फोन आया कि एक दुर्घटना में 16 वर्ष का बच्चा बुरी तरह से घायल हो गया था। और उसे तुरन्त 0– ब्लड ग्रुप की आवश्यकता थी। माधव जी को जैसे ही फोन गया वह तुरन्त एक निजी टैक्सी करके बहन से क्षमा मॉग कर वापस प्रयागराज आये और उस बच्चे को खून दिया और बच्चे की जान बचाई। उन सज्जन की बात सुनकर मेरा मन माधव जी के प्रति श्रद्धा से भर गया।

माधव जी को मैं मन से प्रणाम करती हूँ और ईश्वर को भी प्रणाम करती हूँ कि उन्होंने ऐसा इंसान धरती पर दिया जो मानवता के लिए कार्य कर रहे हैं वरना तो लोग ''आँखों से काजल'' चुराने में लगे हुए हैं। मानवता का कार्य तो छोड़िए दुर्घटना में घायल लोगों को देख कर आगे बढ़ जाते हैं या वीडियो फिल्म बनाने लगते हैं।

उनके कार्यो, मानवता के प्रति प्रेम, उनके कर्तव्यनिष्ठा को देखकर हमको यह शिक्षा मिलती है कि यदि कोई व्यक्ति किसी भी कार्य को निष्ठापूर्वक करना चाहे तो उसके लिए शारीरिक विकलांगता कोई मायने नही रखती है जिसका उदाहरण माधव जी हैं।

*****

राजभाषा की उपयोगिता

राम नरेश तिवारी "पिण्डीवासा"
केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद

हिन्दी हमारे देश की भावनात्मक एकता की परिचायक है। इसे भारत के प्रत्येक क्षेत्र के ऋषियों ने सजाया है सँवारा है और अपने काम काज का माध्यम बनाया है। हिन्दी हमारी राजभाषा के साथ–साथ हमारे देश की राष्ट्रीयता की पहचान है। अपने दैनिक कार्यों में हिन्दी का जितना अधिक प्रयोग करेंगे उतना ही हम जनता के करीब होंगे। हिन्दी में काम करते समय कठिन शब्दों का प्रयोग न करके सरल और सुबोध शब्दों का उपयोग करना चाहिए। फाइलों पर नोटिंग लिखते समय सरल से सरल हिन्दी अथवा मिली जुली भाषा का प्रयोग देवनागरी लिपि में करना चाहिए। कार्यालयों की बैठकों एवं वार्तालाप में हिन्दी बोलचाल की भाषा बन चुकी है। अब फाइलों पर भी इसका अधिकाधिक प्रयोग करके इसे आगे बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए। हमें हिन्दी में लिखने में संकोच, अभ्यास की कमी के कारण होता है और यदि लगातार अभ्यास किया जाय तो हिन्दी में लिखने का यह संकोच भी दूर हो जाता है। राजभाषा हिन्दी में कार्य करने के लिए हमें अपनी मानसिकता बदलनी होगी क्योंकि वर्तमान में राजभाषा हिन्दी की उपयोगिता बहुत बढ़ गयी है। यह सरकारी कार्यालयों में कामकाज की भाषा बन गयी है। बोलचाल को भाषा के सरल शब्दों का प्रयोग जन मानस को प्रभावित करता है तथा जन प्रतिनिधियों को हिन्दी भाषा के माध्यम से कार्य करने में सुगमता भी आती है। हमें अपनी मानसिकता बदलनी होगी तभी हम हिन्दी का आधिकाधिक प्रयोग कर इसकी उपयोगिता का लाभ उठा सकेंगे।

भारतीय संस्कृति की वाहिका होने के साथ–साथ हिन्दी भाषा हमारी स्वतंत्रता की प्रतीक है। अंग्रेजी हमारी मानसिक गुलामी का प्रतीक/हमारे समाज में प्रत्येक व्यक्ति की यह भावना होनी चाहिए कि वह अपनी राजभाषा हिन्दी के लिए क्या भूमिका निभा सकता है और प्रत्येक व्यक्ति को निःस्वार्थ रूप से राजभाषा के उत्थान के लिए अपना हर संभव योगदान देना चाहिए। हिन्दी राजभाषा सदियों से भारत की संपर्क भाषा का कार्य कर रही है। हिन्दी भाषा का इतिहास वैभवशाली एवं समृद्धिपूर्ण है। हिन्दी में कार्य का प्रतिशत सरकारी कार्यालयों में निरन्तर बढ़ रहा है। मूल पत्राचार को अधिक से अधिक सृजित किया जाना चाहिए। हिन्दी, संघ सरकार की राजभाषा होने के कारण हमें प्रेरणा प्रोत्साहन तथा पुरस्कार के माध्यम से इसके कार्यान्वयन को बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए। सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी ने अपनी पहचान बना ली है तथा राजभाषा हिन्दी अब जन उपयोगी भाषा बन गयी है।

हम जानते हैं कि हमारी संविधान सभा में 14 सितम्बर 1949 को एक स्वर में जन जन की भाषा हिन्दी को राजभाषा का सम्मान दिया गया। राजभाषा के काम को गति प्रदान करने के लिए राजभाषा अधिनियम एवं नियम बनाये गये। हिन्दी के काम काज

के लिए प्रोत्साहन योजना और स्वेच्छा की नीति अपनाई गयी। इसके अतिरिक्त राजभाषा हिन्दी की उपयोगिता को देखते हुए सरकार द्वारा महत्वपूर्ण कदम उठाये गये। सरकार की नीति हिन्दी थोपने की नहीं बल्कि स्वेच्छा से अपनाने की रही है। सरकार के इन प्रयासों में राजभाषा विभाग की स्थापना, राजभाषा अधिनियम और संसदीय समिति का गठन आदि प्रमुख है। यह सर्वविदित है कि भाषा के रूप में हिन्दी ने पिछले कई वर्षों से निरन्तर प्रगति की है, इसकी लोकप्रियता बढ़ी है। दूरदर्शन के सीरियलों ने पूरे देश में हिन्दी एवं राष्ट्रीय भावनात्मक एकता के लिए मील के पत्थर का काम किया है। राष्ट्रीय अस्मिता के लिए हमें राजभाषा हिन्दी को माँ का आदर देना है तभी राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता का बट वृक्ष खड़ा हो सकता है।

राजभाषा के रूप में हिन्दी का प्रश्न राष्ट्रीयता एवं अखण्डता से जुड़ा हुआ है। जिसकी आज अत्यन्त आवश्यकता है। हिन्दी की उपयोगिता एवं राजभाषा का दर्जा इसलिए भी दिया गया है क्योंकि हिन्दी विश्व में सबसे अधिक बोली व समझी जाने वाली भाषा है तथा विश्व स्तर पर इसका दूसरा स्थान है। स्वतंत्रता के पश्चात हमारे देश में हिन्दी को राजभाषा के रूप में अपनाने के लिए गैर–हिन्दी भाषी महानुभावों ने भी इसका समर्थन किया था, क्योंकि वे जानते थे कि हिन्दी तो पूरे हिन्दुस्तान की भाषा है जो सबसे अधिक बोली जाती है, समझी जाती है लिखी जाती है, पढ़ी जाती है इस कारण हिन्दी को किसी विशेष प्रांत की भाषा नहीं माना जा सकता। राजभाषा के रूप में हिन्दी का विकास तभी संभव है जब न केवल भारतीय भाषाओं बल्कि विदेशी भाषाओं के भी प्रचलित शब्दों को भी शामिल कर इसके शब्द भंडार में वृद्धि की जाय। सरकारी काम–काज में हिन्दी के प्रयोग करते समय इसे आम आदमी की भाषा मानकर चलना होगा।

हिन्दी केन्द्र सरकार की राजभाषा तथा संविधान की आठवीं अनुसूची में कुल 22 भाषाएं है तथा ये सभी भाषायें एक बहन के रूप में हैं किन्तु इनमें हिन्दी भाषा बड़ी बहन है। हिन्दी का किसी भी प्रांतीय भाषा से कोई विरोध नहीं है लेकिन अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी भारतीय अस्मिता की पहचान है जिसका प्रचार प्रसार देश में ही नहीं विदेशों में भी हो रहा है। प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान तथा व्यापार के क्षेत्र में हिन्दी की लोकप्रियता इतनी बढ़ गयी है कि अंतर्राष्ट्रीय कम्पनियॉ हिन्दी भाषा सीखकर भारत में अपने व्यापार को बढ़ावा दे रही है। वर्तमान विश्व के विभिन्न देशों में हिन्दी कक्षाएं में अनिवार्य रूप से चल रही है तथा विदेशी, हिन्दी सीख रहे हैं। पिछले वर्ष 2018 में 11वॉ विश्व हिन्दी सम्मेलन में मैं स्वयं सहभागी था तथा इसके पहले भी सात विश्व हिन्दी सम्मेलनों में भाग ले चुका हूँ। पत्रक भी प्रस्तुत किया है जहां आ कर देखने से पता चलता है कि अब हिन्दी विश्व स्तर की भाषा बन गयी है। भारत सरकार के प्रयास से वह दिन दूर नहीं जब हिन्दी संयुक्त राष्ट्रसंघ की भाषा बन जायेगी। यह अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत की अस्मिता की पहचान है। राष्ट्रीय भाषा के रूप में हिन्दी का वही स्थान है जो राष्ट्रीय गान, राष्ट्रीय ध्वज तथा राष्ट्रीय चिह्न का है। भारत सरकार की राजभाषा नीति से हिन्दी की उपयोगिता आज भारत सरकार के कार्यालयों बैंकों, उपक्रमों निगमों में प्रत्यक्ष देखने को मिलता है। इस सभी कार्यालयों में निर्धारित मानक के अनुसार कार्य हिन्दी राजभाषा में

हो रहा है जिससे सामान्य जन ग्राहक लाभान्वित हो रहे हैं। गॉव का किसान मजदूर, व्यापारी, कर्मचारी, सभी अपनी भाषा हिन्दी में काम कर खुशी का अनुभव कर रहे हैं।

हिन्दी की उपयोगिता के बारे में मैं आचार्य विनोबा वाणी का उल्लेख करना चाहूँगा। विनोवा वाणी ''मैंने हिन्दी का सहारा न लिया होता तो कश्मीर और असम से केरल के गॉव–गॉव में जाकर मैं भूदान ग्राम दान का क्रान्तिपूर्ण संदेश जनता तक नहीं पहुंचा सकता था। यदि मैं मराठी का सहारा लेता तो महाराष्ट्र के बाहर और कहीं काम न बनता। इसी तरह अंग्रेजी भाषा लेकर चलता तो कुछ प्रांतों में चलता, परन्तु गॉव–गॉव में जाकर क्रांति की बात अंग्रेजी द्वारा नहीं हो सकती थी। इसलिए मैं कहता हूँ कि हिन्दी भाषा का मुझ पर बहुत बड़ा उपकार है, इसने मेरी बहुत बड़ी सेवा की है।'' इससे स्पष्ट है कि महानुभावों ने मनीषी सेतु, सिनेमा जगत, टेलीविजन, राजनीतिक दल, मीडिया जगत के साथ सरकार की राजभाषा हिन्दी के नियम उपनियम हिन्दी के विकास में उत्तरोत्तर वृद्धि कर रहे हैं और हिन्दी की लोकप्रियता दिनों–दिन बढ़ रही है।

भाषा जोड़ती है तोड़ती नहीं-

भाषा का अर्थ है बोलना या कहना अर्थात् भाषा वह है जिसे बोला जाय। भाषा अपने व्यापकतम रूप में वह साधन है जिसके माध्यम से हम सोचते हैं तथा विचारों और भावों को व्यक्त करते है। भाषा मानव के लिए अभिव्यक्ति का साधन है। भाषा समाज की धरोहर होती है। भाषा ही व्यक्ति को समाज में जोड़ती है तथा व्यक्ति और समाज के बीच एक प्रमुख कड़ी का काम करती है। व्यक्ति भाषा को समाज में रहकर ही सीखता है। भाषा विचारों की वाहक होती है। भाषा के बिना विचार अस्तित्वहीन होता है। भाषा और विचार का अत्यन्त घनिष्ठ संबंध है। एक के अभाव में दूसरे की कल्पना व्यर्थ है। भाषा अपने विचार प्रकट करने तथा दूसरे के विचार सुनने का एकमात्र साधन है। इसी आधार पर राजभाषा अर्थात सरकारी काम काज की भाषा का उपयोग सरकारी कार्यालयों में बहुत उपयोगी सिद्ध हो रहा है। किसी ने ठीक कहा है।

"भाषा की लहरों में जीवन की हलचल में।
ध्वनि में क्रिया भरी है और क्रिया में बल है।"

अन्त में इतना ही कहूँगा कि निसंदेह हिन्दी एक समर्थ भाषा है जिसमें विचारों की अभिव्यक्ति अन्य भाषाओं की अपेक्षा सहज और सरल है। राजभाषा का अर्थ है– राजकाज की भाषा अर्थात वह भाषा जिसमें राष्ट्र का कार्य किया जाता है। राजभाषा हिन्दी के प्रयोग में अब सुखद परिवर्तन आ रहा है और सभी क्षेत्रों में राजभाषा हिन्दी प्रगति के पथ पर अग्रसर है। अतः कार्यालय के कामकाज में इसका अधिकाधिक प्रयोग करते हुए हमें गौरव अनुभव करना चाहिए।

*****

"राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की उन्नति के लिए आवश्यक है"
– महात्मा गांधी

नराकास (कार्या0-2), प्रयागराज की पांचवी बैठक दिनांक 28.04.2022 को मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान इलाहाबाद में आयोजित।

दाहिने से बायें– श्री निर्मल कुमार दुबे, सहायक निदेशक (कार्यान्वयन) एवं कार्यालयाध्यक्ष, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय गाजियाबाद, प्रो0 आर0एस0 वर्मा, निदेशक, एम.एन.एन.आई.टी. इलाहाबाद एवं डॉ0 सर्वेश कुमार तिवारी, कुलसचिव, एम.एन.एन.आई.टी. इलाहाबाद।

प्रो0 आर0एस0 वर्मा, निदेशक, एम.एन.एन.आई.टी. इलाहाबाद का अध्यक्षीय संबोधन

श्री निर्मल कुमार दुबे, सहायक निदेशक (कार्यान्वयन) एवं कार्यालयाध्यक्ष, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय गाजियाबाद का संबोधन

न.रा.का.स. (कार्या–02) की पाँचवी बैठक में उपस्थित सदस्यगण

ऑनलाइन हिंदी शिक्षण : चुनौतियाँ और संभावनाएँ

डॉ० चंद्रमौलि त्रिपाठी
प्रवक्ता, केंद्रीय विद्यालय, ओल्ड कैंट

कोरोना महामारी का सबसे व्यापक और परिवर्तनकारी प्रभाव शिक्षा पर पड़ा है। नए सत्र यानी अप्रैल महीने से सभी शिक्षण संस्थान बंद हैं और शिक्षण की व्यवस्था को ऑनलाइन प्रदान करने का प्रयास किया जा रहा है। यह ऑनलाइन तकनीकि शिक्षण, एक ओर सम्भावनाओं के नए द्वार खोल रहा है तो दूसरी ओर विद्यार्थियों, अभिभावकों और शिक्षकों के लिए अनपेक्षित चुनौतियों का कारण भी बना हुआ है। इसका एक पक्ष यह भी है कि प्राइवेट विद्यालयों और सरकारी विद्यालयों के बीच की प्रतिस्पर्धा बढ़ने वाली है। जहाँ संक्रमण से बचने के लिए विद्यालय से दूर विद्यार्थियों से शुल्क वसूलने के लिए प्राइवेट शिक्षा संस्थानों के लिए यह तार्किक जरिया बन गया है तो वहीं एंड्रॉयड फोन तथा तेज नेट कनेक्टिविटी से वंचित ग्रामीण क्षेत्रों के सरकारी पाठशालाओं में पढ़ रहे लाखों छात्रों के अभिभावकों के लिए सरदर्द साबित हो रहा है। उन अभिभावकों के लिए और भी परेशानी का सबब बन कर सामने आ रहा है जिनके एक से अधिक बच्चे पढ़ रहे हैं। शिक्षा के निजीकरण के पक्षधर इस अवसर को भुनाने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ने वाले जबकि सरकारी शिक्षण संस्थान अपनी सीमित सुविधाओं परंतु प्रशिक्षित अध्यापकों के बल पर अपनी श्रेष्ठता तथा औचित्य सिद्ध करने की हर तमाम कोशिशें करेंगे। आइए देखें आखिरकार यह ऑनलाइन शिक्षण है क्या और इसकी सीमाएँ क्या हैं ?

ऑनलाइन शिक्षण के मुख्य रूप से दो भाग किए जा सकते हैं :

1. डिजिटल माध्यम 2. लाइव माध्यम

ये माध्यम निम्न हैं जिनके सहारे आज शिक्षकों द्वारा शिक्षण कार्य किया जा रहा है :

1. यूट्यूब वीडियो 2. व्हाट्सएप संदेश और वीडियो 3. गूगल मीट 4. माइक्रोसॉफ्ट टीम्स 5. जूम 6. जियो मीट 7. फेसबुक 8. स्काइप 9. सरकार द्वारा प्रदत्त शैक्षणिक चैनल स्वयंप्रभा आदि।

ऑनलाइन शिक्षण का सबसे लोकप्रिय तरीका यूट्यूब वीडियो का है। इसमें अध्यापक किसी विषय पर अपना व्याख्यान या पाठ सबसे पहले रिकार्ड करते हैं और उस रिकार्डिंग को यूट्यूब पर बनाए गए खुद के चैनल पर अपलोड करते हैं। इस यूट्यूब लिंक को बच्चों को व्हाट्सएप पर शेयर किया जाता है, जिससे उसे खोलकर देखा जा सके। इसमें अध्यापक को बहुत ज्यादा तकनीकि दक्षता की आवश्यकता भी नहीं होती है, कामचलाऊ जानकारी से कार्य सम्पन्न किया जा सकता है। भाषा शिक्षण में इसकी उपयोगिता अन्य विषयों से ज्यादा है। विशेषतः कविता शिक्षण में सस्वर कविता का पाठ प्रस्तुत करना सामान्य कक्षाओं में एक चुनौती हो जाती है यदि शिक्षक की आवाज में मृदुता न हो। इस माध्यम में शिक्षक किसी अन्य की आवाज का उपयोग करके कविता की समझ को बढ़ा सकता है।

परंतु इसकी सीमाएँ भी हैं। दस मिनट से ज्यादा लंबा वीडियो बड़ी मुश्किल से अपलोड होता है। वीडियो बनाते समय मोबाइल कैमरे की क्षमता भी एक बाधा होती है। व्याख्यान तो आसानी से हो जाते हैं परंतु किसी संदर्भित विषयोपयोगी सहायक सामग्री का प्रदर्शन एक कुशलता भरा कार्य होता है। लोग स्क्रीन सेवर, केन मास्टर जैसे एप का प्रयोग वीडियो में लिखित सामग्री के प्रेषण तथा गुणवत्ता के संवर्धन हेतु करते हैं। प्रायः शिक्षकों के पास एंड्रायड फोन मौजूद होते हैं जिनसे से इस तरह की अध्ययन सामग्री बनाई जा सकती है। हाँ गुणवत्ता और उत्कृष्टता के लिए संसाधनों से ज्यादा उसकी आवाज और प्रस्तुति का ढंग ज्यादा मायने रखता है। उदाहरण के लिए यदि किसी छोटी कक्षा के लिए कविता का शिक्षण करना है तो जरूरत होगी उसके सस्वर लयबद्ध, यति गति युक्त पाठ से, जिससे विद्यार्थी की रुचि बनी रहे। वहीं कहानियों के शिक्षण को रोचकता के साथ प्रस्तुत किया जा सकता है

जिसमें उच्चारण की स्पष्टता अत्यधिक मायने रखती है।

बच्चे इसे देखते हैं, परंतु कौन नहीं देख रहा है इसे पता करना मुश्किल काम है। यदि कई अध्यापकों ने वीडियो भेज दिए हैं तो बच्चे प्राथमिकता के स्तर पर उन्हीं वीडियो को देखते हैं जिनमें उनकी रुचि होती है या जिसकी प्रस्तुति बेहतर होती है। बच्चों के मोबाइल का डेटा भी सामग्री डाउनलोड करने में मायने रखता है। एक बेहतर बात शिक्षक के लिए होती है कि उसे पाठ पूर्णता का प्रमाण भी मिल जाता है तथा उसके द्वारा बनाए गए वीडियो हमेशा के लिए सुरक्षित हो जाते हैं जिनका प्रयोग वह बाद के लिए कर सकता है। इसमें पाठ के पुनरीक्षण, संवर्धन का पूरा अवसर अध्यापक के पास रहता है जिससे वह उत्कृष्ट पाठ को ही बच्चों के अध्ययन के लिए भेजता है।

दूसरा तरीका है व्हाट्सएप से शिक्षण। हमारे कई साथी इसका धड़ल्ले से प्रयोग कर रहे हैं। इसमें अपना पाठ संदेश लिखकर, रिकार्ड कर, चित्र द्वारा प्रेषित कर दिया जाता है। बच्चे इसे आसानी से देखकर अपना काम करते हैं। परंतु ज्यादातर इसमें इधर उधर की विषय सामग्री का संयोजन ही मिलता है। बच्चों की कुछ दिनों बाद उदासीनता नजर आने लगती है। चूँकि यह केवल अध्यापकों की प्रतिक्रिया हेतु संचालित समूह होता है जिसे नियंत्रित किया जाता है, अतः इसे एकतरफा माध्यम भी कहा जा सकता है। अधिकतर अध्यापक इसी प्रकार बनाए हुए व्हाट्सएप समूहों में अपने पाठ प्रेषित करते हैं। यह बहुत सुलभ है तथा नेट डेटा की खपत भी बहुत कम होती है। इसमें विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया बाधित कर दी जाती है अन्यथा असंबद्ध सामग्री या संदेश प्राप्त होने के खतरे रहते हैं।

गूगल मीट या गूगल क्लासेस : इस प्रकार का शिक्षण जीवंत कक्षाओं के लिए प्रयुक्त होता है। इसमें 200 बच्चे आसानी से जुड़कर पढ़ सकते हैं। शिक्षक व्याख्यान या अन्य सामग्री को आसानी से स्क्रीन शेयर की तकनीकी से प्रस्तुत कर सकता है। बच्चे दिखते भी हैं और उनकी प्रतिक्रिया भी ली जा सकती है परंतु इस माध्यम की सबसे बड़ी खामी नेट कनेक्टिविटी है। यदि कनेक्शन वीक हो जाता है तो शिक्षक की बात न तो बच्चों को सुनाई पड़ती है न ही वह दिखता है। अतएव इस माध्यम से शिक्षण हेतु आवश्यकता होती है तेज गति के नेट की जिससे बाधारहित कक्षा सम्पन्न की जा सके। अभिभावकों के लिए यह जरूरी होता है कि वे बच्चे की देखरेख करते रहें। माइक और कैमरा जबतक शिक्षक निर्देश न दे बंद रखें। प्रायः यह देखने में आता है कि बच्चे बीच–बीच में कैमरा और माइक अनम्यूट कर कक्षा बाधित कर देते हैं। इस माध्यम से अधिकतम बच्चों को एक साथ पढ़ा सकते हैं और उनकी उपस्थिति भी ली जा सकती है । अन्य माध्यमों में बच्चों की उपस्थिति की समस्या आती है जिसपर शिक्षक का नियंत्रण नहीं रहता।

एक अन्य माध्यम फेसबुक लाइव का है,परंतु यह अत्यंत सतर्कता की माँग करता है और केवल व्याख्यान पद्धति से पढ़ाई के लिए उपयोगी है। इसमें कोई भी ज्वाइन कर सकता है और अपनी प्रतिक्रिया तत्क्षण संदेश के रूप में प्रेषित कर सकता है। बहुत कम माध्यमिक शिक्षक इस तकनीक का प्रयोग करते हैं क्योंकि छोटे बच्चों के लिए यह उपयुक्त नहीं है ।

इन माध्यमों से पढ़ाए जा रहे पाठों के लिए गृहकार्य तथा परीक्षण एक श्रमसाध्य और दुरूह कार्य है। बच्चों को कार्य प्रदान करने के लिए कार्यपत्रकों का प्रयोग किया जाता है जिसे व्हाट्सएप से पीडीएफ प्रारूप में बच्चों के पास भेज दिया जाता है। अब समस्या उनके किए गए कार्य के जाँच की आती है, यदि बच्चों से किए गए कार्यों की छायाप्रति भेजने को कहा जाता है तो वे आनाकानी करते हैं या सभी बच्चे भेज भी दे तो अध्यापक के मोबाइल की अपनी सीमाएँ भी हैं। जल्द ही उसका पूरा मेमोरी स्लाट ऐसे चित्रकार्यों से भर जाता है। अध्यापक प्रदत्त कार्य को जाँच कर, प्रत्येक विद्यार्थी को उसके द्वारा की गई त्रुटियों के संज्ञान हेतु पुनः भेजे, जिससे अशुद्धियों का परिमार्जन किया जा सके। यह कार्य बहुत धैर्य तथा समय की अपेक्षा रखता है। इस प्रकार के शिक्षण से जुड़े कुछ अध्यापकों के अनुभव मिश्रित प्रतिक्रिया वाले हैं।

डॉ पवन कुमार सिंह, केंद्रीय विद्यालय में पढ़ाते हैं। उन्होंने बातचीत के दौरान बताया कि उनके द्वारा

लॉक डाउन के समय गूगल मीट पर शूरू की गई लाइव कक्षा अत्यंत प्रभावी रही। उन्होंने बच्चों की रुचि के अनुसार शिक्षण किया और बच्चों का फीडबैक उत्साहजनक रहा।

केंद्रीय विद्यालय में माध्यमिक कक्षाओं में शिक्षण करने वाले शिक्षक डॉ कमलाकांत के अनुभव भी इसी प्रकार के हैं। उनकी लाइव कक्षाओं में सभी विद्यार्थी समय पर आते हैं और विषय को भली प्रकार समझते हैं। उन्होंने बच्चों के लिए कक्षाओं का समय निर्धारित कर दिया है,जिसका सभी बच्चे कड़ाई से पालन करते हैं।

जहाँ तक मेरा प्रश्न है, मैंने ऑनलाइन कक्षाओं की शुरुआत 'भक्तिन' कहानी के ऑडियो रिकार्डिंग को बच्चों के लिए बने व्हाट्सएप समूह पर डालकर की,जिसे बच्चों ने सुना और अपनी प्रतिक्रिया में नई अनुभूति के प्रति प्रसन्नता प्रकट की। दूसरी प्रस्तुति हेतु एक कविता का वीडियो बना यूट्यूब लिंक शेयर किया। संभावित विद्यार्थी दर्शकों का प्रतिशत 60 के आसपास था। बच्चों के परीक्षण/मूल्यांकन के लिए गूगल फार्म से प्रश्नोत्तर भेजा। इसमें बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया परंतु अनेक बच्चों ने हिंदी टाइपिंग की समस्या बताई। इसका निदान अगले परीक्षण फार्म में बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर देकर किया। विद्यालयों के अन्य शिक्षक भी परीक्षण/मूल्यांकन हेतु इस विधि का प्रयोग कर रहे हैं। अत्यधिक प्रयोग से मोबाइल खराब होने की संभावना बनी रहती है। लाइव कक्षाओं के लिए गूगल मीट प्लेटफार्म का प्रयोग करना शुरू किया गया है। यह अन्य माध्यमों से आसान तो है, परंतु इसमें रिकार्डिंग के लिए मोबाइल स्क्रीन रिकॉर्डर का प्रयोग करना पड़ता है तथा इससे मोबाइल का स्पेस तुरंत खत्म होने का संकट रहता है। साथ ही साथ सभी बच्चे मीट से पहले क्विट करें इसका खास ध्यान रखना पड़ता है। पाठपूर्व तैयारी करनी पड़ती है तथा आसपास शोर न हो ऐसा प्रबंध भी करना पड़ता है। यदि लाइव कक्षाओं के दौरान कोई बच्चा अपना माइक अनम्यूट करता है तो उसके आसपास की आवाज भी बाधा बन जाती है।

शिक्षा मंत्रालय ने इस विषय पर एक व्यापक दिशा निर्देश जारी किया है जिसके अनुसार ऑनलाइन शिक्षण कक्षा के हिसाब से अलग–अलग समय पर होगा । शिक्षा मंत्रालय ने पहली से लेकर 12वीं कक्षा के छात्रों के लिए प्रतिदिन के हिसाब से ऑनलाइन कक्षा की अवधि और संख्या निर्धारित कर दी है। दिशा–निर्देशों में डिजिटल पहुंच वाले, सीमित डिजिटल पहुंच वाले या डिजिटल पहुंच से वंचित छात्रों, सभी के लिए एनसीईआरटी के वैकल्पिक अकादमिक कैलेंडर के उपयोग पर जोर दिया गया है तथा डिजिटल शिक्षा के दौरान शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्य से जुड़े आयाम पर ध्यान देने पर जोर दिया।

पूर्व–प्राथमिक बच्चों के लिए ऑनलाइन कक्षाएँ 30 मिनट से अधिक नहीं होनी चाहिए। कक्षा के लिए नियत दिन में अभिभावकों के साथ चर्चा करने की बात कही गई है जो 30 मिनट की हो सकती है। पहली कक्षा से आठवीं कक्षा के छात्रों के लिए एक दिन में दो ऑनलाइन सत्र से अधिक आयोजित न हों तथा प्रत्येक का समय 45 मिनट तक हो। नौवीं से 12वीं कक्षा के लिए एक दिन में चार सत्र से ज्यादा न हों। प्रत्येक की अवधि 30 से 45 मिनट तक हो।

इसके अतिरिक्त आठ कदम सुझाये गए हैं :

1. योजना 2 समीक्षा 3. व्यवस्था 4. मार्गदर्शन 5. वार्ता 6. कार्य 7 . निगरानी 8 . सराहना

स्कूलों के प्रमुखों, शिक्षकों, अभिभावकों, छात्रों के लिए सुझाव दिए गए हैं, जो मूल्यांकन की जरूरत, ऑनलाइन शिक्षा के दौरान अवधि, समावेश, ऑनलाइन संतुलन, ऑफलाइन गतिविधि आदि से संबंधित हैं।

इस तरह विद्यार्थियों के हित में जितना संभव हो सकता है शिक्षक, विद्यालय, सरकार की ओर से कदम उठाए जा रहे हैं ताकि शैक्षिक हानि कम से कम की जा सके । चूँकि यह ऑनलाइन शिक्षण का दौर शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए नया है अतएव लगातार प्रशिक्षण और अभ्यास से यह बेहतर परिणाम दे सकता है।

*****

भाषाभिव्यक्ति

डॉ० चंद्रमौलि त्रिपाठी
प्रवक्ता, केन्द्रीय विद्यालय ओल्ड कैंट

मत भागो मत डरो तुम्हें मैं राज बताऊँगी
कठिन नहीं हूँ सरल हूँ मैं तुमको समझाऊँगी।।
मैं वेदों में उपनिषदों में रहती हूँ
मानवता के सहज मार्ग को चुनती हूँ
करुणा, दया, द्रविणता की भाषा बनकर
मंत्रों में छंदों को झंकृत करती हूँ।
आओ बैठो प्यारे! मुझसे बात करो
पंचतंत्र की कथा आज दुहराऊँगी।।
भूल गए उस युग को जब थी जनवाणी
पावन–सुन्दर–मनोरमा थी कल्याणी
मेरा संबल ले मुझसे उपकृत होकर
बनती नई विधाएँ,नई कहानी थी।
मैं हूँ माँ,तू तो है मेरा सुन्दर सुत
अपनी वत्सलता का पान कराऊँगी।।
संस्कारों के बीज वपन करने वाली
संरक्षित–सभ्यता–सुमन–सुष्मित डाली
राम–कृष्ण आदर्शों की बनकर गाथा
भरत वाटिका की करती मैं रखवाली।
आओ फिर एकता मन्त्र का गान करो
विश्वगुरु का ध्वज फिर से फहराऊँगी।।

*****

पानी है अनमोल

इच्छा चतुर्वेदी, पुस्तकालय एवं सूचना सहायक
भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण, म.क्षे.के., इलाहाबाद

पानी को बर्बाद न करना,
अगर नहीं है प्यासा मरना।
इस दुनिया में सबका मोल,
पानी है चीज अनमोल।।

प्रकृति का उपहार है, नदियों का श्रृंगार है।
प्यासे की दरकार है, बिन जल जनसंहार है।।

पंचतत्व में तत्व है एक,
इसके बिना नहीं जीवन का अस्तित्व।
अमृतमय हर बूंद है,
समझो जल संरक्षण का महत्व।।

मानव हो या जीव जन्तु, सबकी
प्यास बुझाता है।
सूखे पड़े पेड़ पौधों को, हरा भरा
कर जाता है।
आज न समझी इसकी कीमत, ताउम्र पछताओगे।
आने वाली पीढ़ी को क्या, सीख नयी दे पाओगे।।

दुनिया में खारा जल अपार,
क्या इससे प्यास बुझाओगे।
शुरू करो जल का संरक्षण,
अन्यथा जल संकट को लाओगे।।

बूंद–बूंद से घड़ा है भरता, सीख आज ये पाओगे।
नही करोगे जल बर्बाद, कसम आज ये खाओगे।
कसम आज ये खाओगे, कसम आज ये खाओगे।।

*****

रुला गया हर घर को ये कोरोना काल

आनन्द प्रकाश श्रीवास्तव, लेखानुभाग
भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान, इलाहाबाद

फिर आये न ऐसा साल न हो कोई बेहाल
रुला गया हर घर को ये कोरोना काल।
हे दिल की मेरी धड़कन, तू हुयी क्यों बेगानी।
अब क्या सुनाऊं तुझको, रूठी है जिंदगानी।।
अधर में छोड़ा मुझको, अधूरी मेरी कहानी।
सहारा तेरा छूटा, दुनिया मेरी अनजानी।।
भूल नहीं सकती, यादें तेरी पुरानी
क्यों छोड़ गये पापा, बिटिया हूँ तेरी रानी।
थी अलग एक पहचान,
स्वभाव सरल इंसान।
प्रिय मित्र मेरे मुकेश,
अब यादें रहेंगी शेष।।
संभल जाये परिवार, भगवन करो
उपकार।
फिर आये न ऐसा साल, न खोये किसी का लाल।
रुला गया हर घर को, ये कोरोना काल।
सूना हुआ जीवन, लगता नहीं अब मन।
सपने मेरे अधूरे, अधूरा मेरा बचपन।।
हिम्मत नहीं हारा हूँ, पापा अभी छोटी हूँ
तेरे लिए रोती हूँ।।
बिटिया बोले नादान, क्यों ले गये भगवान।
दोस्त मेरे संजीव, याद बहुत आओगे।।
सोचा नहीं था मित्र, ऐसे भी छोड़ जाओगे
फिर आये न ऐसा साल, जीना हुआ मुहाल।।

रूला गया हर घर को, ये कोरोनाकाल।
रूठी हुयी जिंदगी, जीवन संकटकाल।
घटना बड़ी दुखद है, शब्द नहीं निशब्द है।।
पहले खोया माँ को फिर पापा ने छोड़ा साथ,
संकट आया ऐसा, बच्चे हुए अनाथ।।
फिर आये न ऐसा साल न हो कोई बेहाल।
रुला गया हर घर को ये कोरोना काल।
तस्वीरों में अब यादें, कुछ लम्हें, कुछ वादे।
कभी न थकने वाला, यूँ थम
जायेगा आज।
प्रिय मित्र मेरे बृजेश, क्यों छोड़ गये
ये देश।
फिर आये न ऐसा साल, मचाये न
ये भूचाल।
रुला गया हर घर को, ये कोरोनाकाल।
जीवन साथी छूटा, क्यों रब है हमसे रूठा।
बच्चों को है आस, सपना अब सपना है।
जीवन अब तपना है, दुखद है ब्लेसी मैडम।
जीवन का ऐसा गम, कभी न हिम्मत हारें।
हम सब साथी सारे।
आनंद नहीं जीवन में जीवन का पड़ा अकाल,
रुला गया हर को ये कोरोना काल।

*****

नर हो, न निराश करो, मन को

विजयेश पाण्डेय, प्राचार्य
केन्द्रीय विद्यालय, आई.आई.आई.टी. झलवा

"वे पथ क्या पथिक कुशलता क्या,
जिस पथ में बिखरें शूल न हों,
नाविक की धैर्य कुशलता क्या,
जब धाराएँ प्रतिकूल न हों,"
– जयशंकर प्रसाद

जीवन में जब प्रयास करने के बाद भी अभीष्ट फल की प्राप्ति नहीं होती है तो व्यक्ति का निराश हो जाना स्वाभाविक है लेकिन निराशा को जीवन का स्थायी भाव मान लेना, अपने सामर्थ्य पर विश्वास न कर आगे प्रयास न करना मनुष्यता के विरुद्ध जाना है। प्रसिद्ध मुक्केबाज मुहम्मद अली ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि, 'जो व्यक्ति जीवन में ज्यादा खतरे नहीं उठाता वह एक साधारण जिन्दगी जीने से ज्यादा कुछ नहीं कर सकता है' अर्थात व्यक्ति को परिस्थितियों के आगे कभी समर्पण नहीं करना चाहिए बल्कि अपने भीतर के साहस को बरकरार रखना चाहिए। साहस एक ऐसा मानवीय गुण है जो व्यक्ति की सफलता की संभावना को बड़ी मात्रा में बढ़ा देता है।

इतिहास में ऐसे बहुत से उदाहरण मिल जाएंगे जहाँ साहसी व्यक्तियों की अप्रत्याशित जीत हुई है। नेपोलियन ने कहा था कि, 'दुनिया का हर युद्ध पहले दिमाग में जीता जाता है फिर मैदान में,' इसका सीधा सा अर्थ है कि जीवन में आने वाली हर चुनौती से निपटने के लिए सटीक नीतियों की तो आवश्यकता होती ही है साथ ही सीमित संसाधनों के उचित प्रयोग का भी अत्यधिक महत्त्व है। थॉमस अल्वा एडिसन ने हजार असफल प्रयासों के बाद बिजली का बल्ब बनाया। अगर अपनी आरंभिक असफलताओं से घबराकर वे हार मान बैठते तो क्या आज विश्व उनके आविष्कारों से परिचित हो पाता?उनका यह कथन महत्वपूर्ण है कि 'मैं यह नहीं कहूँगा कि मैं एक हजार बार असफल हुआ, मैं यह कहूँगा कि इसे बनाने में मुझे एक हजार प्रयास करने पड़े। भारत की उड़न परी के नाम से विख्यात पी टी उषा ने जकार्ता एशियाई खेलों में पांच स्वर्ण पदक जीतकर तहलका मचा दिया था लेकिन यही पी टी उषा उससे एक साल पहले लांस एंजलिस ओलम्पिक में सेकंड के सौवें हिस्से से कांस्य पदक चूक गयी थी। अगर वे निराश होकर बैठ जाती तो क्या वे उस मुकाम को हासिल कर पातीं जिसे उन्होंने अर्जित किया? राष्ट्रीय स्तर की बालीबाल खिलाड़ी अरुणिमा सिन्हा को अपराधियों ने ट्रेन से नीचे फेंक दिया। इस खिलाड़ी को इस दुर्घटना के बाद एक पैर गंवाना पड़ा, लेकिन उन्होंने अपने ऊपर निराशा को नहीं हावी होने दिया और जीवन को एक नए सिरे से नए सन्दर्भ के लिए तैयार किया और अपनी अदम्य जिजीविषा के बल पर माउंट एवरेस्ट सहित दुनिया की सात पर्वत चोटियों पर तिरंगा लहराकर विश्व कीर्तिमान स्थापित किया।

ऊपर कुछ व्यक्तियों के जीवन से उदाहरण दिए गए है। इतिहास ऐसे अनेक लोगों की जीवन गाथाओं से भरा पड़ा है जिन्होंने अपने पौरुष और साहस से

विपरीत परिस्थितियों से जीवन को बाहर निकालकर सफलता के नए आयाम गढ़े हैं। निराशा के दौर से बाहर निकलने वाले हर सफल व्यक्ति की कहानी के मूल में एक ही कारण होता है। उसने सही दिशा में लगातार प्रयास किया। सफलता असफलता से परे उसने सिर्फ कर्म पर जोर दिया। भगवद्गीता में भी तो यही कहा गया है– कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन /माकर्मफलहेतुर्भूर्मा तेसङ्गोऽस्त्वकर्मणि। वास्तव में हम वैसा ही बनते हैं जैसे हमारे विचार होते हैं। अपने विचारों को सदा सकारात्मक रखना चाहिए। यही जीवन का फलसफा है। अपने लक्ष्य के बारे में हर पल सोचते रहें, संसाधनों एवं अतीत की असफलताओं का रोना रोने की बजाय, यह सोचना चाहिए कि हम अपना सर्वोत्तम कैसे दे सकते हैं। वास्तविकता यह है कि मंजिले उन्ही को मिलती हैं/जिनके सपनों में जान होती है/पंखों से कुछ नहीं होता/ हौसलों से उड़ान होती है।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि विषम परिस्थितियों में मार्ग निकालने का साहस करने वाला हमेशा सफल होता है। जिस प्रकार आग में तपने से सोना कुंदन बन जाता है और वह अधिक शुद्ध व मूल्यवान हो जाता है। बिना जले वह चमक सकता है परन्तु शुद्ध व मूल्यवान नहीं बन सकता है। प्रासंगिक पंक्तियाँ हैं–

"जब टूटने लगे हौसले तो बस ये याद रखना
बिना मेहनत के हासिल तख्तो ताज नहीं होते
ढूंढ़ लेना अंधेरों में मंजिल अपनी
जुगनू कभी रोशनी के मोहताज नहीं होते।"

*****

पापा की परी हूँ मैं

विवेक कुमार मिश्र, आशुलिपिक
एम.एन.एन.आई.टी

मैं भी इस संसार को देखना चाहती हूँ।
मैं भी इस संसार में आना चाहती हूँ।।
आपकी परी भी आपका नाम रोशन कर सकती है।
इंजीनियर, डॉक्टर या वैज्ञानिक बन सकती है।।
आपका सहारा मिला तो मैं भी कुछ कर सकती हूँ
पापा मैं आपकी परी हूँ।
आप गीत हो हमारे, मैं संगीत बन सकती हूँ।
मैं आपके आंगन को संगीतमय कर सकती हूँ ।
लता, आशा व महान संगीतज्ञ बन सकती हूँ।
गर आपका आशीष है तो,
मैं दुनिया भी बदल सकती हूँ।
पापा मैं आपकी परी हूँ।
क्या है वजूद मेरा इस संसार में यह पूछती हूँ मैं।
लड़की हो, पराया धन हो जवाब सुनती यही हूँ मैं।
मायके में पिता और भाई,
ससुराल में पति पर आश्रित हूँ मैं।
क्या है वजूद मेरा इस संसार में यह पूछती हूँ मैं।
पापा मैं आपकी परी हूँ।
अब भी वक्त नहीं है बिगड़ा,
अब तुम सब कब जागोगे।
शक्ति स्वरूपा देवी के बिन किस द्वारे दिया जलाओगे।
बेटी नहीं बचाओगे तो,
माँ, बेटी, और बहन कहाँ से पाओगे।

दत्तोपंत ठेंगड़ी राष्ट्रीय श्रमिक शिक्षा एवं विकास बोर्ड- एक परिचय

विश्व प्रकाश, पूर्व क्षेत्रीय निदेशक
दत्तोपंत ठेंगड़ी राष्ट्रीय श्रमिक शिक्षा एवं विकास बोर्ड

स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त देश के आर्थिक विकास के लिए श्रमिकों को प्रशिक्षित करने की एक संस्था बनाने की सलाह के लिए सन् 1957 में फोर्ड फाउण्डेशन समिति का गठन किया गया। इस समिति के द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट पर जुलाई 1957 में भारतीय श्रम सम्मेलन में गहन चर्चा की गयी। भारतीय श्रम सम्मेलन की संस्तुतियों के अनुपालन में 16.09.1958 को भारत सरकार के श्रम नियोजन एवं पुनर्वास मंत्रालय के अन्तर्गत एक स्वायत्त निकाय के रूप में केन्द्रीय श्रमिक शिक्षा बोर्ड का गठन किया गया जो कि विश्व की अनूठी संस्था है, जिसका स्वरूप त्रिपक्षीय है। श्रम मंत्रालय भारत सरकार की स्वीकृति के उपरान्त दिनांक 14, सितम्बर, 2015 बोर्ड का नाम बदल कर दत्तोपंत ठेंगड़ी राष्ट्रीय श्रमिक शिक्षा एवं विकास बोर्ड किया गया। इसके नीतियों का निर्धारण भारत सरकार, नियोक्ताओं के संगठनों, श्रम संगठन के प्रतिनिधियों तथा शैक्षणिक संस्था के प्रतिनिधियों द्वारा होता है। वर्तमान में दत्तोपंत ठेंगड़ी राष्ट्रीय श्रमिक शिक्षा एवं विकास बोर्ड के अध्यक्ष श्री विरजेश उपाध्याय जी हैं। दत्तोपंत ठेंगड़ी राष्ट्रीय श्रमिक शिक्षा एवं विकास बोर्ड का मुख्यालय नागपुर में है। इसके छः आँचलिक निदेशालय क्रमशः कोलकाता, मुम्बई, नई दिल्ली, भोपाल, चेन्नई व गुवाहाटी में स्थित हैं। इन आँचलिक निदेशालयों की देखरेख में 50 क्षेत्रीय निदेशालयों व 09 उपक्षेत्रीय निदेशालयों द्वारा सम्पूर्ण भारत वर्ष में दत्तोपंत ठेंगडी राष्ट्रीय श्रमिक शिक्षा एवं विकास बोर्ड का कार्य बोर्ड के महानिदेशक श्री हर्ष वैद्य जी (भारतीय रक्षा लेखा सेवा) के निर्देशन में प्रभावी ढंग से सफलतापूर्वक किया जा रहा है।

बोर्ड के उद्देश्य-

1. श्रमिकों के सभी वर्गों में, जिनमे ग्रामीण श्रमिक भी शामिल है देशभक्ति, राष्ट्रीय अखण्डता, एकता सौहार्द, साम्प्रदायिक सहिष्णुता, धर्म निरपेक्षता तथा भारतीय होने के स्वाभिमान की भावना को मजबूत बनाना।

2. श्रमिकों के सभी वर्गों को जिनमें ग्रामीण श्रमिक एवं महिला श्रमिक भी शामिल हैं राष्ट्र के सामाजिक तथा आर्थिक विकास में उनकी अभिज्ञ सहभागिता के लिये उनके उद्घोषित उद्देश्यों के अनुसार तैयार करना।

3. श्रमिकों में उनके सामाजिक तथा आर्थिक वातावरण की समस्याओं, परिवार के सदस्यों के प्रति उनके उत्तरदायित्यों और नागरिकों के रुप में उद्योग में श्रमिक के रूप में अपने श्रम संघ के सदस्य एवं पदाधिकारी के रूप में उनके अधिकारों और दायित्यों के प्रति और अधिक समझ का विकास करना।

4. समय–समय पर देश की चुनौतियों का सामना करने हेतु सभी पहलुओं में श्रमिकों की क्षमता का विकास करना।

5. अधिक प्रबुद्ध सदस्यों तथा बेहतर प्रशिक्षित अधिकारियों के माध्यम से शक्तिशाली एकीकृत एवं अधिक जिम्मेदार श्रमिक संघों का विकास करना तथा श्रमिक संघ आंदोलन में प्रजातांत्रिक प्रक्रियाओं और परम्पराओं को मजबूत करना।

6. श्रमिकों को संगठन के कर्मचारियों के रुप में

अधिकार देना तथा सौहार्दपूर्ण औद्योगिक सम्बंध एवं औद्योगिक शांति बनाए रखने के लिये प्रभावी माध्यम के रूप में श्रमिकों में अपनत्व की भावना का विकास करना।

7. रोजगार प्राप्त करने एवं उसे बनाए रखने के लिये आवश्यक ज्ञान एवं कौशल को हासिल करने एवं सतत उन्नयन के साधनों तक पहुँचने के लिये श्रमिकों की आवश्यकताओं की पूर्ति करना।

बोर्ड द्वारा संचालित प्रशिक्षण कार्यक्रम–

बोर्ड द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रमों को संचालन तीन स्तरों पर किया जाता है।

1. राष्ट्रीय स्तरः दत्तोपंत ठेंगड़ी राष्ट्रीय श्रमिक शिक्षा एवं विकास बोर्ड द्वारा 1970 में राष्ट्रीय स्तर पर प्रशिक्षण की आवश्यकताओं को देखते हुए भारतीय श्रमिक शिक्षण संस्थान की स्थापना की गयी। भारतीय श्रमिक शिक्षण संस्थान बोर्ड के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम, पुनश्चर्या कार्यक्रम आवश्यकता के अनुसार आयोजित करता है। भारतीय श्रमिक शिक्षण संस्थान मूलरूप से बोर्ड के लिए ज्ञान केन्द्र रूप में कार्य करता है। बोर्ड के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को समय के आवश्यकता के अनुसार तैयार करने को तत्पर रहता है। साथ ही भारतीय श्रमिक शिक्षण संस्थान के पास एक व्यापक–वृहद पुस्तकालय है जो भारत वर्ष का श्रम क्षेत्र का एक उत्कृष्ट पुस्तकालय है, जहाँ श्रमिक जगत से संबधित उत्कृष्ट पुस्तकें, पत्र पत्रिकाऐं उपलब्ध रहती है जो श्रमिक जगत में कार्य करने वालों के लिए सदैव उपलब्ध है। भारतीय श्रमिक शिक्षण संस्थान बोर्ड के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की प्रशिक्षण आवश्यकताओं को पूरा करने करने के साथ ही साथ बोर्ड के उद्देश्यों के अनुपालन में राष्ट्रीय श्रम संघों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों के लिए आवश्यकता के अनुरूप प्रशिक्षण कार्यक्रमों को आयोजन करता है। श्रम संघों को प्रजातांत्रिक ढंग से अच्छे से कार्य करने में समर्थ बनाने तथा वर्तमान चुनौतियों का सफलता से सामना करने के लिए तैयार करने हेतु विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन भारतीय श्रमिक शिक्षण संस्थान करता है।

2. आँचलिक स्तरः आँचलिक स्तर पर प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन आँचलिक निदेशालयों द्वारा किया जाता है।

3. क्षेत्रीय स्तर पर क्षेत्रीय निदेशालयों द्वारा क्षेत्रीय स्तर एवं इकाई स्तर (कारखाने) पर संगठित क्षेत्र के लिये निम्नलिखित कार्यक्रमों का आयोजन उद्योग की आवश्यकता के अनुसार किया जाता है।

1. प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण। (10 दिवसीय)
2. व्यक्तित्व विकास कार्यक्रम। (5 दिवसीय)
3. पुनश्चर्या कार्यक्रम। (एक सप्ताह)
4. दो–दिवसीय आवश्यकता पर आधारित कार्यक्रम।
5. एक दिवसीय संयुक्त शैक्षणिक कार्यक्रम व स्ववित्त पोषित कार्यक्रम (कारखाने की माँग एवं आवश्यकता के अनुसार किया जाता है)।
6. इकाई स्तर की कक्षा।

असंगठित एवं ग्रामीण क्षेत्र के लिए कार्यक्रमः

1. चार दिवसीय सशक्तीकरण शिविर। (असंगठित क्षेत्र हेतु)
2. चार दिवसीय सशक्तीकरण शिविर। (कमजोर वर्ग हेतु)
3. चार दिवसीय सशक्तीकरण शिविर। (ग्रामीण श्रमिकों हेतु)

4. दो दिवसीय विशेश कार्यक्रम (कमजोर वर्ग, असंगठित, एस.सी0/एस.टी./महिला श्रमिक हेतु/बाल श्रमिक/बाल श्रमिकों के माता पिता हेतु)।

5. श्रम कल्याण और विकास कार्यक्रम। (दो दिवसीय)

6. ग्रामीण स्तरीय मनरेगा जागरुकता कार्यक्रम।

असंगठित एवं ग्रामीण क्षेत्र में उपरोक्त कार्यक्रमों का आयोजन दत्तोपंत ठेंगड़ी राष्ट्रीय श्रमिक शिक्षा एवं विकास बोर्ड द्वारा कराया जा रहा है। इन कार्यक्रमों के आयोजन के पूर्व सर्वेक्षण कराया जाता है तथा प्रशिक्षार्थियों के आवश्यकतानुरूप कार्यक्रम में चर्चा हेतु विषयों का चयन किया जाता है।

सामान्यतया उपरोक्त कार्यक्रमों में राष्ट्रीय एकता, संगठन स्वरोजगार योजनायें, स्वयं सहायता समूह, स्वास्थ्य जागरूकता, परिवार कल्याण, एड्स जागरूकता, बचत, विभिन्न सामाजिक बुराइयाँ, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, सुकन्या समृद्धि योजना, स्वच्छ भारत अभियान, जन धन योजना, अटल पेंशन योजना, श्रम योगी मान–धन योजना (पी.एम.–एस.वाई.एम.) राष्ट्रीय स्वास्थ्य बीमा योजना एवं सरकार की अन्य कल्याणकारी योजनाओं पर चर्चा की जाती है एवं इन विषयों पर जानकारी देकर जागरुकता लाने का प्रयास किया जाता है।

साथ ही बोर्ड सहायता अनुदान कार्यक्रम के तहत विभिन्न श्रमिक संघों एवं स्वयं सेवी संगठनों को श्रमिक शिक्षा कार्यक्रम आयोजित करने हेतु वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है।

आज के इस वैश्वीकरण के प्रतिस्पर्धा के युग में विभिन्न चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना करने के लिये एवं देश की प्रगति के लिये तेजी से त्रुटिहीन एवं गुणवत्ता के साथ उत्कृष्ट कार्य करने के लिये श्रमबल को प्रशिक्षण के द्वारा तैयार करने का पुनीत कार्य कर रहा है।

बोर्ड का नाम परिवर्तन–

इसकी घोषणा तत्कालीन केन्द्रीय श्रम राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री बंडारु दत्तात्रेय ने नई दिल्ली में बोर्ड के नये भवन के उद्घाटन के अवसर पर (दिनांक 14 सितम्बर,2015) (केन्द्रीय श्रमिक शिक्षा बोर्ड से दत्तोपंत ठेंगडी राष्ट्रीय श्रमिक शिक्षा एवं विकास बोर्ड) किया। उक्त अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि''बोर्ड देश में श्रमिकों की जरुरतों के प्रति उत्तरदायी और उपयोगी रहा है।''

बोर्ड के नये भवन का उद्घाटन दिनांक 14 सितम्बर, 2015 को तत्कालीन लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा महाजन ने किया, उक्त अवसर पर उन्होंने कहा कि श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी जी देश के प्रसिद्ध राष्ट्रीय श्रमिक नेता थे, उन्होंने देश के आर्थिक विकास के लिये बहुत योगदान दिया है।

साथ ही श्रीमती सुमित्रा महाजन ने बोर्ड के अधिकारियों एवं कर्मचारियों से कहा श्री ठेंगडी जी की कार्य संस्कृति से प्रेरणा लेकर कार्य करने की अपील की। (पत्र सूचना कार्यालय के अनुसार)

नई चुनौतियाँ–नई दिशा–नये नामकरण के साथ–

बोर्ड के साथ पूज्य दत्तोपंत ठेंगडी जी का नाम जुड़ने के साथ हमारी नैतिक जिम्मेदारी है कि हम पूज्य ठेंगडी जी के जीवनदर्शन–विचारों से प्रेरणा लेकर भारतवर्ष के सभी श्रमिकों (श्रमशक्ति) को शिक्षित–प्रशिक्षित करने का कार्य पूरी तन्मयता एवं समर्पण से करने का संकल्प लें तथा अपने नये नाम को चरितार्थ करें।

*****

दिनांक 23.08.2022 को नराकास (कार्या0-2), मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान इलाहाबाद में नगर स्तरीय कार्यशाला का आयोजन

दाहिने से बायें—श्री हरीकृष्ण तिवारी, सहायक निदेशक (राजभाषा), आयकर विभाग, प्रो0 आर0एस0 वर्मा, निदेशक, एम.एन.एन.आई.टी. इलाहाबाद एवं डॉ0 सर्वेश कुमार तिवारी, कुलसचिव, एम.एन.एन.आई.टी. इलाहाबाद।

प्रो0 आर0एस0 वर्मा, निदेशक एम.एन.एन.आई.टी. इलाहाबाद का आर्शीवचन

डॉ0 सर्वेश कुमार तिवारी, कुलसचिव, एम.एन.एन.आई.टी. इलाहाबाद का संबोधन

नगर स्तरीय कार्यशाला में उपस्थित प्रतिभागी गण

पैलिन्ड्रोमिक संख्यायें

डॉ० पुनीता बत्रा
प्रोफेसर 'एच', हरीश-चन्द्र अनुसंधान संस्थान

ऐसे शब्द, वाक्यांश और संख्याएं, जिनको विपरीत क्रम में लिखने से हमें वही शब्द, वाक्यांश और संख्यायें मिलती हैं, उन्हें पैलिन्ड्रोम कहते हैं। उदाहरण –level, Madam, 323 आदि। पैलिन्ड्रोमिक संख्यायें वे संख्यायें है, जिनमें अंकों को पलट (reverse) कर लिखने से हमें वही संख्या प्राप्त होती है। उदाहरणस्वरूप– 33, 121, 212, 3223, 12321, 146641 आदि। यह संख्यायें सममितीय (symmetrical) होती है। यह जॉच करने के लिये कि कोई संख्या पैलिन्ड्रोमिक है कि नहीं, हम अंकों को पलट कर लिखते हैं, फिर नयी संख्या की तुलना मूल (original) संख्या से करते हैं। यदि दोनों संख्यायें समान हैं तो मूल संख्या पैलिन्ड्रोमिक संख्या है अन्यथा नहीं।

0, 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9 एक अंक की पैलिन्ड्रोमिक संख्यायें हैं। 11, 22, 33, 44, 55, 66, 77, 88, 99 दो अंकों की पैलिन्ड्रोमिक संख्यायें हैं। दो अंकों की कुल 9 पैलिन्ड्रोमिक संख्यायें हैं।

तीन अंकों की कुल कितनी पैलिन्ड्रोमिक संख्यायें संभव है? तीन अंकों की पैलिन्ड्रोमिक संख्याओं में चूंकि पहला और तीसरा अंक समान होता है, अतः हमें सिर्फ पहले और दूसरे अंक की संख्या को निर्धारित करना होता है। पहले अंक के स्थान पर 1 से 9 तक की कोई भी संख्या हो सकती है और दूसरे अंक के स्थान पर 0 से 9 तक की कोई भी संख्या हो सकती है। अतः दूसरे अंक के स्थान पर कुल दस अंक संभव है। अतः तीन अंकों की कुल 910 अर्थात 90 पैलिन्ड्रोमिक संख्यायें संभव हैं।

इसी प्रकार चार अंकों की कुल पैलिन्ड्रोमिक संख्यायें 1221, 3223, 6446, 2662 इत्यादि हैं। चार अंकों की कुल कितनी पैलिन्ड्रोमिक संख्यायें संभव हैं? चार अंकों की पैलिन्ड्रोमिक संख्याओं में पहला और चौथा अंक समान होता है, इसी तरह से दूसरा और तीसरा अंक भी समान होता है। अतः हमें सिर्फ पहले और दूसरे अंक की संख्या को निर्धारित करना होता है। पहले अंक के स्थान पर 1 से 9 तक की कोई भी संख्या हो सकती है और दूसरे अंक के स्थान पर 0 से 9 तक की कोई भी संख्या हो सकती है। अतः चार अंकों की कुल 910 अर्थात 90 पैलिन्ड्रोमिक संख्यायें हैं।

इसी तरीके से पॉच अंकों की कुल 91010 अर्थात 900 पैलिन्ड्रोमिक संख्यायें संभव हैं। चूँकि पहले अंक के लिए 1 से 9 तक 9 विकल्प (choice) है। छः अंकों की कुल 900 पैलिन्ड्रोमिक संख्यायें संभव हैं। अतः 1 और 10,10,000 के बीच कुल 10+9+90+90+900+ 900 = 1999 पैलिन्ड्रोमिक संख्यायें है।

पैलिन्ड्रोमिक अभाज्य संख्या (Palindromic Prime Number) एक अभाज्य संख्या है जो कि पैलिन्ड्रोमिक संख्या भी है। कुछ पैलिन्ड्रोमिक अभाज्य संख्यायें 2, 3, 4, 5, 7, 11, 101, 131, 151 इत्यादि हैं। 11 के अलावा बाकी सभी पैलिन्ड्रोमिक अभाज्य संख्याओं में अंकों की संख्या विषम (odd) होती है। सबसे बड़ी पैलिन्ड्रोमिक अभाज्य संख्या की खोज डेविड ब्रोडहर्स्ट ने 2014 में की है। डेसिमल एक्सपेन्शन में, हर पैलिन्ड्रोमिक संख्या, जिसमें अंकों की संख्या सम है, 11 से विभाजित होती है।

जला दो एक दीप

जला दो
एक दीप अंतस् में भी प्रेम का
सूख गई है
इस घट की बाती
स्नेह के अभाव में
जला दो एक दीप
अंतस् में भी प्रेम का
न जाने कितने अरसे से
छाई हुई है कालिमा
पटी पड़ी है
छल– कपट की धूल
न जाने कितने युगों से
चीख चीखकर बता रही हैं
हमारे घरों की बंद खिड़कियां
नहीं फलीभूत होगा
स्वार्थी अंधी दौड़ का
जब तक मुरझाया रहेगा
निश्छल चेहरा कलुआ का
बता रहा है इतिहास आज
पथ पर चलने वाला
ईर्ष्या, दंभ, पाखंड के
नहीं रह सका सुख–चैन से
अरमानों के अपने
स्वर्ण– महल में
जला भी दो
दीप एक
अंतस् में भी स्नेह का।

*****

परिवर्तन

डॉ0 संपूर्णानंद मिश्र
वरिष्ठ प्रवक्ता हिंदी, केन्द्रीय विद्यालय, इफको

परिवर्तनशील है यह संसार
यह ध्रुव सत्य है
नहीं है इसमें कोई संदेह
आज जो चल रहा है
कल बिल्कुल नहीं होगा
नहीं संकोच करती है
प्रकृति परिवर्तन में इसीलिए
संकोच की मुट्ठी खोल देती है
लुटाती है अपनी संपदा
दोनों हाथों से जानती है कि
अंश है इसमें सबका
और जिसका है उसको मिलना चाहिए
अपनी आत्मा पर कार्पण्य का बोझ नहीं
ढो पाती है इसीलिए
बावजूद नहीं सीख पाता है
मनुष्य कुछ भी उससे समा लेना चाहता
है
समस्त सांसारिक वैभव को
अपने पेट की भरसांय में
गिद्ध दृष्टि रहती है दूसरे के हिस्सों में भी
जरायम की दुनिया
तक ले जाता है दूसरों के अंश
को निगलने का सपाट रास्ता
भयाक्रांत हो जाता है
परिवर्तन के प्रभंजन से ही मनुष्य
नहीं सामना करना चाहता है
बदलाव के अंधड़ का क्योंकि
वह जानता है कि परिवर्तन की आंधी
उड़ा ले जाती, सब कुछ पहुंचाती है
सबसे ज्यादा चोट
अहंकार की थूनी को
*****

इन नयनों को मैं जाम लिखूँ (गीत)

नीलिमा मिश्रा
केन्द्रीय विद्यालय, आई.आई.आई.टी झलवा

छलका दो मदिरा के प्याले इन नयनों को मैं जाम लिखूँ।
मृगनयनी कजरारी अँखियन को भोर लिखूँ या शाम लिखूँ।।
अधरों की दो पंखुड़ियों का, आमंत्रण है कितना प्यारा।
उस पर बलखाती उलझी लट, का गहरा सा है गहवारा।।
पतझड़ जैसे मेरे मन को मधुमासी तुमने कर डाला।
सारी दुनिया को छोड़ चला, उस पंथी का विश्राम लिखूँ।।
छलका दो मदिरा के प्याले इन नयनों को मैं जाम लिखूँ।।
नख से शिख तक मादकता का, इक प्यारा सा सुंदरवन हो।
पत्ता–पत्ता बूटा–बूटा, महके सुरभित तुम उपवन हो।।
जीवन की कोमल/क्यारी में मकरंद सुवासित है तुमसे।
जूही, चम्पा, नर्गिस, बेला, चंदन, केसर क्या नाम लिखूँ।।
छलका दो मदिरा के प्याले इन नयनों को मैं जाम लिखूँ।।
मन की वीणा के तार जरा, तुम कोमल हाथों सहलाओ।
गूँजे स्वर लहरी अंतस तक, वो गीत सुनाकर बहलाओ।।
मनुहारों का तुम मान रखो, अनुबंध प्रणय का तुम कर लो।
चंदा से उजले मुखड़े को मैं प्रीत भरा पैगाम लिखूँ।।
छलका दो मदिरा के प्याले इन नयनों को मैं जाम लिखूँ।।
दर्पण की ओर निहारो मत, मेरी आँखें भी दर्पण हैं।
ना ठुकराओ इन बातों को, ये चाहत के आमंत्रण हैं।।
हो मधुर मिलन वासंती सा ऋतुपति की है सौगन्ध तुम्हें।
जीवन की इस मधुरिम बेला, को वृंदावन का धाम लिखूँ।।
छलका दो मदिरा के प्याले इन नयनों को मैं जाम लिखूँ।।

वीरांगना दुर्गा देवी : एक प्रेरणा स्रोत

संजीव नागर, प्रभारी राजभाषा
हरीशचन्द्र अनुसंधान संस्थान, झूँसी

मैं इस लेख के माध्यम से एक ऐसी क्रांतिकारी लौह महिला के कुछ कृतित्व पर प्रकाश डालना चाहूँगा, जिन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिलाकर रख दी। भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन में अग्रणी महिला, क्रांतिकारी दुर्गा देवी का नाम एक आदर्श माना जाता है।

इसका जन्म 07 अक्टूबर, 1902 को कौशाम्बी जनपद (पूर्व इलाहाबाद) के शहजादपुर गॉव में एक गुजराती ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनके पिता श्री बांके बिहारी भट्ट इलाहाबाद कलेक्ट्रेट में नाजिर थे। तीन वर्ष की आयु में दुर्गा देवी अपनी माँ के साथ शिक्षा ग्रहण करने के लिए पिता के पास कटरा (जयसिंह सवाय) इलाहाबाद चली गई। वहीं पर सन् 1918 में महान क्रांतिकारी प्रोफेसर भगवती चरण वोहरा, पुत्र श्री शिवचरन बोहरा (रेलवे मुलाजिम), लाहौर निवासी से इनका विवाह सम्पन्न हुआ। पति के साथ यह भी क्रांतिकारी गतिविधियों में सक्रिय हो गई।

क्रांतिकारी दुर्गा देवी के भतीजे श्री उदय शंकर भट्ट आज भी इनके जन्म स्थान शहजादपुर, जो कि अब कौशाम्बी जिले में स्थित है, में रहते हैं एवं इनकी गौरव गाथा का बड़े गर्व एवं विस्तार से वर्णन करते हैं।

दुर्गा देवी को चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह एवं सुखदेव द्वारा भाभी पुकारे जाने के कारण ही इन्हें 'दुर्गा भाभी' के नाम से पुकारा जाने लगा। पूरे क्रांतिकारी संगठन में दुर्गा भाभी एवं भगवती चरण जी ही विवाहित थे जो संगठन का पोषण एवं आर्थिक सहायता प्रदान करते थे।

उनके द्वारा किये गये महत्वपूर्ण कार्यों पर मैं प्रकाश डालना चाहूँगा जो कि निम्नवत हैं:–

1. क्रांतिकारी दुर्गा भाभी ने ब्रिटिश हुकूमत की परवाह किये बगैर सरदार भगत सिंह को लाहौर से कलकत्ता पहुँचाया।
2. दिनांक 09 अक्टूबर, 1930 को अंग्रेज गवर्नर पर गोलियां चलाई जो कि बॉम्बे कांड के नाम से चर्चित है।
3. 12 सितम्बर, 1931 से दिसम्बर 1932 ई. तक जेल में रही।
4. सन् 1919 ई. के रेगुलेशन एक्ट के विरोध हेतु इन्हें 1932 ई. तक लाहौर में नजरबंद रखा गया।
5. क्रांतिकारियों के लिए राजस्थान से पिस्तौल, माउजर लाना तथा मुल्तान में बम की खोल लाना इनके मुख्य कार्य थे। चन्द्रशेखर आजाद को माउजर इन्होंने ही ला कर दी थी।
6. चन्द्रशेखर आजाद के आग्रह पर कानपुर से दिल्ली जाकर भगत सिंह की रिहाई की बात गांधी जी के समक्ष रखी, इस पर इन्होंने दुर्गा भाभी की वीरता की

सराहना की किन्तु भगत सिंह की रिहाई की बात गवर्नर के सम्मुख रखने को वे राजी नहीं हुए।

7. यतीन्द्रनाथ दास की शव यात्रा को लाहौर से कलकत्ता ले गई, जिसमें लाखों लोगों ने भाग लिया।

8. लाहौर पुलिस कमिश्नर एच. टी. हॉलिन्स ने अपनी पुस्तक 'नो टेन–कमॉन्डमिन्ट्स' में दुर्गा भाभी को 'मिस्टीरियस लेडी ऑफ द फ्लैट' लिखा।

9. भगत सिंह को छुड़ाने की तैयारी में बनाये गये बम के परीक्षण में दुर्गा भाभी के पति भगवतीचरण वोहरा जी लाहौर में रावी नदी के तट पर शहीद हो गये, पहली बार लोगों ने दृढ़ प्रतिज्ञ चन्द्रशेखर आजाद जी को रोते हुए देखा।

10. दुर्गा भाभी ने सन् 1939 ई. में मद्रास जाकर मारिया मांटेसरी से मांटेसरी पद्धति का प्रशिक्षण प्राप्त किया फिर सन् 1940 ई. में लखनऊ में कैंट रोड के (नजीराबाद) एक निजी मकान में सिर्फ पांच बच्चों के साथ मांटेसरी विद्यालय खोला। आज भी यह विद्यालय लखनऊ में मांटेसरी इंटर कालेज के नाम से जाना जाता है।

भारत की इस क्रांतिकारी वीरांगना दुर्गा देवी, जिनसे अंग्रेज खौफ खाते थे, का दिनांक 14 अक्टूबर, 1999 को गाजियाबाद में स्वर्गवास हो गया। आज मुझे ऐसी क्रांतिकारी वीरांगना दुर्गा देवी का सुपौत्र होने पर गर्व है।

*****

हिन्दी कविता (क्षणिकाएं)

नवीन कुमार श्रीवास्तव, सहायक
राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी

जीवन ज्योति

इस वीराने में है कहीं चपला से एक लकीर,
शून्य से भी घिरकर चमक रही है तकदीर,
तन्मयता से बढ़ रही है जीवन की अभिलाषा,
शून्य देख रहा है कगार स्तब्ध सा।

प्रभात

तेरे आने की आहट से हो गया विभोर,
चाहत के पंछी मन में करने लगे शोर,
इस मन में भी छा जाऐगी हरियाली,
तेरे एक चितवन से घिर जाएगी घटा घनघोर।

मंथन

आ गया समय अब मनन का,
नई चेतना व सृजन का,
आजादी को बचाना है,
आंदोलन सफल बनाना है।

जितेन्द्र कुमार चतुर्वेदी
कर्मचारी चयन आयोग (म.क्षे.)

ऐ भारत के वीर सपूतों,
तुमको मेरा ''सत्–सत् प्रणाम्।
तुम मातृभूमि की रक्षा में,
सर्वस्व निछावर करते हो !
जिस मातृभूमि पर जनम लिया,
उस मातृभूमि पर मरते हो।
ऐ मातृभूमि के ''मतवालों'',
तूमको मेरा ''सत्–सत् प्रणाम्।
उसकी ममता की छाँवों में,
रह पल बढ़ के फौलाद बने।
ऐ वीर सपूतों की ''जननी'',
तूमको मेरा ''सत्–सत् प्रणाम्।
सिंदूर सजाये साजन के,
बैठी आंगन की उपवन में।
कुछ किलकारी थी गूंज़ रही,
कुछ आस लगाए थी मन में।
ऐ मातृभूमि पर ''बलिहारन'',
तूमको मेरा ''सत्–सत् प्रणाम्।
उन वीर जवानों को देखा,
जो सब कुछ अपना छोड़ा है।
इस मातृभूमि की ताकत से,
अपनी ताकत को जोड़ा है।
इस मातृभूमि के ''रखवालों'',
तूमको मेरा ''सत्–सत् प्रणाम्।
हर बूँद–बूँद कतरा–कतरा,
इस मातृभूमि के नाम किया।
नाकाम कर दिये दुश्मन को,
उसके सीने पर वार किया।
ऐ मातृभूमि के ''जाबाजों'',
तूमको मेरा ''सत्–सत् प्रणाम्।
इस वसुन्धरा की हरियाली,
मुस्कान तुम्हारा है दर्पण!
है गर्व देश को देशभक्त तुम,
हृदय पुष्प श्रद्धा अर्पण।
ऐ भारत के ''अमरदीप'',
तूमको मेरा ''सत्–सत् प्रणाम्।

*****

माँ की ममता

प्रेमचन्द्र, वरिष्ठ सहायक
एम.एन.एन.आई.टी.

बड़े संसार में माता का प्यार देखा है।
ममता में भरे आँसू हजार देखा है।।
पिता कौन है पहले माता ही बताती है,
बोलना–चालना माता ही सिखाती है।
सर्दी, गर्मी और बरसात से बचाती है,
खून को दूध बना ममता पिलाती है।
छलकते आँसू में सुत का दुलार देखा है,
ममता में भरे आँसू हजार देखा है।
भरत के प्यार में खुश रहती कैकेयी रानी,
सोचा बेटा भरत को ही मिले राजधानी।
जाके दशरथ से वर माँग लिया मनमानी।
प्यार ने ले लिया दशरथ की जिन्दगानी।
कलंकिनी बनी कैकेयी घर–घर पुकार देखा है,
ममता में भरे आँसू हजार देखा है।
बड़े संसार में माता का प्यार देखा है।
ममता में भरे आँसू हजार देखा है।

*****

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में हिन्दी की स्थिति

वंदना सिंह
हरीशचन्द्र अनुसंधान संस्थान, झूँसी, प्रयागराज

कभी भारत वर्ष जैसे विशाल समुद्र रूपी देश को लांघने निकलें तो आप यहॉ के कण–कण में हिन्दी का सानिध्य पायेंगे। इस गॉव से उस गॉव तक, इस शहर से उस शहर तक बस वही हिन्दी मिलती है जो हमारे दिल में बसती है। एक जगह से दूसरी जगह, सिर्फ इसके बोलने का तरीका बदला है पर क, ख, ग, घ की वर्णमाला, जो भाषा की जान है वह कभी नहीं बदलती।

भारत के सबसे बड़े भू–भाग में हिन्दी बोली जाती है। भारत की बहुत बड़ी आबादी जिस धारा से जुड़ी है, वह है हिन्दी। कल के झरोखों से पीछे देखने की कोशिश करें तो हम पायेंगे कि अंग्रेजों ने अपने समय में सारे सरकारी कार्य अंग्रेजी के रंग में डुबो कर हिन्दी की अस्मिता पर ही प्रश्न चिन्ह लगा दिया था। पर वही हिन्दी जब क्रांतिकारियों की तेजस्वी वाणी से आग बनकर निकली तो उसने सारे अंग्रेजी साम्राज्य का नाश कर दिया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिन्दी को हमारे देश में एक बाद फिर सम्मान के साथ प्रतिष्ठित किया गया।

वर्तमान समय में हम यदि हिन्दी की स्थिति का अवलोकन करें तो हम पायेंगे कि आधुनिकता की दौड़ में और पश्चिमी संस्कृति के फैलाव के कारण हमारा हिन्दी से नाता कमजोर पड़ गया है। जिस प्रकार मोर कुछ पल की वर्षा और बाह्य सौंदर्य को देखकर नाचने लगता है, उसी प्रकार आधुनिकता के मोर आज कल के अभिभावक भी हैं, जो अंग्रेजी शिक्षण प्रणाली और बोल–चाल की भाषा में अंग्रेजी के प्रयोग के कारण अंग्रेजी के महत्व को बढ़ा रहे हैं। कुछ लोग तो अंग्रेजी बोलने वालों को बड़ी शान से देखते और सुनते हैं, पर हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि अपनी भाषा और संस्कृति से बढ़कर हमारा संपूर्ण चरित्र निर्माण कोई और नहीं कर सकता है। अतः हिन्दी वाचन और पठन–पाठन को एक उच्च स्थान प्रदान करना चाहिए।

किन्तु, कुछ उदाहरणों के बाद भी देश में हिन्दी को उत्तम स्थान प्राप्त नहीं हुआ है। सन् 1977 ई. में तत्कालीन विदेशमंत्री के रूप में श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने पहली बार संयुक्त राष्ट्र संघ के महाधिवेशन में हिन्दी में भाषण देकर विश्वपटल पर हिन्दी की गरिमा को प्रतिष्ठापित किया। इसी प्रकार, 28 सितम्बर 2014 को न्यूयार्क में एक विशाल समारोह में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा हिन्दी में दिया गया भाषण इस बात को साबित करता है कि हमारा भारत वर्ष अभी भी गाँव के खेतों और खलिहानों में ही बसता है, जहॉ की भाषा हिन्दी है। अतः नयी पीढ़ी को भारत वर्ष के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी के महत्व को समझना चाहिए और उसके विकास हेतु अपना तन, मन और धन अर्पित करना चाहिए।

अनेक संस्थाएँ और लेखक अभी भी हिन्दी के प्रचार प्रसार में लगे हुए हैं। हमें ऐसी नवजागृति की आवश्यकता है जो हिन्दी की कमजोर पड़ रही नींव को फिर से मजबूत कर सके। सुभाषचन्द्र बोस ने अपने भाषण में कहा था– "हिन्दी भारत के सबसे बड़े भू–भाग में बोली जाने वाली भाषा है और हिन्दी के विकास के बिना भारतवर्ष का विकास संभव नहीं है।"

जिस प्रकार भँवरों को पराग की प्राप्ति फूलों से ही होती है ठीक उसी प्रकार समृद्धि रूपी पराग हिन्दी रूपी पुष्प में ही मिलेगी। अजीम शायर इकबाल ने कहा है–

"कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।
सदियों रहा है दुश्मन दौरे जहां हमारा।।"

ठीक उसी प्रकार भले ही कुछ भाषायें हिन्दी की दुश्मन साबित हुई हों, पर हिन्दी जो हमारी सभ्यता और संस्कृति में बसती है, सूर्य जैसे चमक से दीप्तिमान हो कर ही रहेगी।

*****

सड़क

मंजू तिवारी, पी.जी.टी. (भौतिकी),
केन्द्रीय विद्यालय, न्यू कैण्ट, प्रयागराज

प्रयागराज– एक अद्भुत नगरी। हमेशा मन को रमाती हैं, भोर में, सड़कों–गलियों पर घंटियों, आरतियों की आवाज। शाम का धुंधलका भी धर्मरस से घुला।

अब तो यहीं बदली भी हो गई थी। आते जाते आदत हो गई थी, गंगा पुल, नदी का किनारा रोज देखने की, सड़क से आते जाते।

मन में आ जाता है, बचपन में सड़क पर घर के पास ही मेरा गिरना, माथे से खूब खून का बहना, मां–पिताजी का दौड़ कर आ जाना, हास्पिटल ले जाना, टांके लगना, जीवन भर के लिए निशान बन जाना। सड़क ही तो हमें सुख–दुःख दोनों से मिलाती है। मुझे महसूस होती हैं हमेशा अनगिनत सड़कें। नवंबर में प्रयागराज यातायात पुलिस, यातायात माह मना रही है, तब तो याद आती ही रहेंगी सड़कें। हमारा मन, जाने कितने चौराहे से आने वाली सड़कों से बना मनराहा लिए, असीम विचार–प्रवाहों की आवाजाही को अंजाम दे रहा है।

जीवन यात्रा के पड़ावों पर महसूस हुआ, सड़क भी एक विशेष जीवन–पुंज है। यदि ट्रैफिक नियमों को अनदेखा करते हैं, यह सड़क हमें झकझोर देती है। एक मासूम को रौंदते ट्रक से कभी, निपस्त हो जाती है, कभी एक वृद्ध को चलती गाड़ी के सामने आ जाने पर भी खरोंच भी नहीं लगने देती।

गौरतलब है, सफर चलता रहता है।

कवयित्री कावेरी जी की कुछ पंक्तियां याद आ गई।

कुल लफ्ज कुछ लहजे
मिल जाते है रास्तों में,
मुस्करा देते हैं
समझा देते हैं
सफर का एक नया फलसफा..... ।

मोहन सपरा जी की पंक्तियां हैं:–

जिंदगी।
आजकल तुम्हारा हासिल
तलाश रहा हूँ..... ।

पुनः विचार श्रृंखला लिप्त होती है सार्सकव पर। कोरोना के प्रथम सत्यापन केस की आज सालगिरह भी है, पहली। पिछले दिनों कोरोना महामारी लगातार हमें नयी दुनिया दिखा रहा है। शिक्षक हो या छात्र, व्यापारी हो, या समाजसेवी हो, हम सब के मध्य भावनात्मक, आभासी सड़क विद्यमान रही, जो मिटी नहीं ऑनलाइन संपर्कों द्वारा। हमारी दिनचर्या में आमूलचूल परिवर्तन आ गये, पर हमारी भावपूर्ण आभासी सड़कें ही तो हमारे ध्येय को मंजिल पहुंचने में कारगर रही। हम आजकल हम घर में बाहर निगल कर भौतिक सड़क पर नहीं जा रहे। पर, एक दूसरे से गलतफहमी के लिए लालबत्ती एवं सुलझावों के लिए हरी बत्ती का प्रभाव पैदा कर रहे हैं। यह हमारे मित्रों और हमारे बीच भावों के बांधों की विद्यमानता का ही तो परिणाम है। ऐसे हम और हमारे आसपास, कोरोना की त्रासदियों से होते हुए भी, खुशियों को भी हम साथ लेकर चल रहे हैं। ऐसा तभी हो पाता है जब एक मन से दूसरे मन तक निःस्वार्थ राह होगी।

तभी हम लोगों में अंतरंगताओं को बढ़ावा मिलेगा। हम

लोग एक दूसरे को दुःख न दे कर खुशी, संतुष्टि, तृप्ति को अनुभूत करेंगे।

"वसुधैव कुटुंबकम्" परंपरा का निर्बाध प्रवाह होता रहेगा।

इसी तरह जीवन यात्रा में, सगे–संबंधियों, मित्रों के साथ हो या सड़क पर चल रहे हों, और हम लोग ट्रैफिक नियमों को अनदेखा करेंगे तो यह समय, यह सड़क हमें दुःख से भर सकती है। दुःख हमें हमेशा झकझोरता रह सकता है। सड़क हमें चेतावनी देती है, उचित सिद्धांतों से चलने की, अन्य साथियों की भी परवाह करते रहने की। सब राजी खुशी हों, तो सड़क भी फूली नहीं समाती। यह दुनिया, स्वतः ही जीवंतता, शांति और सौहार्द से भरी पूरी हो जाएगी।

अंत में नीरजा शुक्ला 'नीरू' द्वारा रचित कुछ पंक्तियां:–

"जीवन के कोरे पन्नों पर कुछ तुम लिख दो,
कुछ हम लिख दें
प्रश्नों के हल मिल जाएंगे
कुछ तुम पढ़ लो कुछ हम पढ़ लें
हम दोनों के बीच में जो
कुछ कहा अनकहा बाकी है।
चलो छोड़ के सब मतभेदों को
कुछ तुम कह दो कुछ हम कह दें
जय हिन्द।"

वंदना

डॉ. मुकेश कुमार, सह-आचार्य एवं
विभागाध्यक्ष, गणित विभाग, एम.एन.एन.आई.टी.

मैंने अर्चना की थी उस देवी की
दीपों से दीपाली बन गयी।
मेरी आकॉक्षा थी उसको शिरोधार्य करने की,
जो पत्थर से बनी थी हीरों से जड़ी थी।
नित्य सवेरे उठकर ऊषा की स्वर्णिम किरणों में,
मैं उनके नीलम देख देखकर हर्षित होता था।
मुझे विनीत स्वर दो त्रिभुवन मोहिनी
विजय पताका फहराऊँ,
जीवन को मैं सीप बना लूँ स्वाति को
मैं पा जाऊँ,
स्वच्छन्द सुचेत मन से जब मैने,
उनके हृदय में वास किया,
मेरी सीमित रूचियों ने सीमा में मुझको
बॉध दिया।
मेरी श्रद्धा को देख अक्षु सोनिक से सरिता बह
निकली,
उनके डिम्पल को देख देख मन से मेरे बेचैनी
जागी।
मोती मेरे मन बिखरे बिखरे आज पड़े हैं
सग वो पल दो पल का देकर देखो कितनी दूर
खड़े हैं।

अहंकार

वीरेन्द्र प्रसाद, स्नातक शिक्षक (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय, सी.आर.सी.एफ. फाफामऊ

अहंकार अथवा घमंड को हम कोई अन्य नाम देना चाहे तो इसे बीमारी अथवा दीमक की उपमा दे सकते हैं, जिस तरह बीमारी के रोगाणु दिनों दिन शरीर को क्षीण कर एक दिन समाप्त कर देते हैं, अहंकार भी उसी अनुरूप व्यक्ति को ऐसे नशे में मदहोश कर देता है वह व्यक्ति को न केवल सच्चाई से परे एक कल्पना लोक में ले जाता हैं बल्कि जीवन के लिए असमायोजन करने वाली विकट स्थितियों को भी जन्म दे देता हैं।

जीवन में दुःख का पर्याय अहंकार ही हैं, व्यक्ति अपने अहम भाव के कारण सभी से स्वयं को श्रेष्ठ तथा हर क्षेत्र में ज्ञान, शक्ति से संपन्न मानने लगता हैं, वह नशे में इस हद तक डूबा रहता है कि दूसरों के ज्ञान, अनुभव, सलाह का उपयोग करने की कभी जरूरत ही नहीं समझता हैं, संसार में अनगिनत जीव है उनमें से सबसे कमजोर जीव में भी एक जबर्दस्त खूबी होती है वो है अनुकरण, जिसके सहारे वह अपनी क्षमता में वृद्धि करता जाता हैं, मगर अहंकारी इंसान कभी किसी के अनुकरण को स्वीकार नहीं करता हैं।

जहॉ अहंकार का वास होता है वहां नम्रता, बुद्धि, विवेक, चातुर्य कोई गुण विद्यमान नहीं होगा, घमंड जिस इंसान पर हावी होता है वह सबसे पहला काम भी यही करता है कि अन्य गुणों का प्रवेश न हो, व्यर्थ के अहं भाव के कारण उसकी नजर में हमेशा सब लोग नीचे एवं निम्न स्तर के होते हैं, वह सदैव दूसरों की राह में बाधाएं उत्पन्न कर प्रसन्नता पाता है तथा औरों को गिराकर अपनी राहे बनाता हैं।

जैसे–जैसे अहंकारी व्यक्ति का ओहदा बढ़ता जाता है उसी अनुरूप उसका दम्भ भी वृद्धि करने लगता हैं, सत्ता धन आदि के नशे में इस कद्र मशगूल रहता है कि वह कभी कल्पना नहीं कर पाता है कि एक दिन उसका भी पतन होगा, जीवन में कठिनाइयॉ आएगी तथा उस समय उसके साथ खड़े होने वाला कोई नहीं होगा, एक अभागे इंसान स्वरूप उन्हें एकाकी रहकर कष्टों के बीच जीवन यापन करते हुए अन्तः पतन को प्राप्त होना होगा, कितना भी अच्छे व्यक्तित्व वाला इंसान हो यदि वह अहंकारी है तो उसके समस्त गुण उस तरह धुंधले हो जाते है जिस तरह धधकते अंगारों पर जमी राख की परत अग्नि को धुंधला कर जाती है।

अहंकार युक्त इंसान को मानव जाति का सबसे तुच्छ प्राणी माना जाता है, वह अपने अहम भाव

को बनाए रखने के लिए किसी पाप को करने से भी नहीं हिचकता हैं, व्यक्ति में स्व–प्रशंसा से अहं भाव का जन्म होता है तथा स्वयं को सबसे सर्वोच्च मान लेने की स्थिति में यह अपने उत्कृष्ट रूप में दिखता हैं, दूसरों के अधिकारों की परवाह न करते हुए अतिक्रमण करना समेत कई तरह के मानसिक विकार की अहंकार के कारण ही पनपते हैं।

दम्भ मृगतृष्णा की भांति है जिससे न उसकी प्यास शांत होती है न औरों की, अपनी तमाम कमजोरियों को दरकिनार कर हर क्षेत्र में स्वयं को पूर्ण मानने की भूल एक अहंकारी की प्रथम विशेषता कही जाती है, वह अपने बारे में कई गलत धारणाएं भी पाले रहता है जैसे वह बुद्धिमान है तथा औरों की कमियों व दोषों को ही हमेशा देखता रहता है, परनिंदा में उसे आनंद की प्राप्ति होती है, यदि आपका कोई दोस्त अहंकारी है तो विश्वास कीजिए एक दिन आपको उसकी तरफ से घृणा, द्वेष, क्रोध, प्रतिशोध इनमें से कोई एक तोहफा अवश्य मिलेगा, क्योंकि संकीर्ण स्वयंभू मस्तिष्क केवल इसी तरह के विचारों को जन्म देता है।

क्षमा, दया, करूणा, प्रेम, धैर्य, नम्रता, सादगी ये कुछ ऐसे गुण है जो प्रत्येक मानव में आंशिक रूप से हो यह अपेक्षा की जाती है मगर जहाँ अहंकार का घर होता है वहां इन समस्त मानवीय मूल्यों के लिए कोई जगह नहीं बसती है। वह व्यक्ति इन अमोघ रूपी औषधि से जीवन भर अपरिचित ही रहता है, जिसके कारण उसके अहं का स्वरूप दिन ब दिन उसे जकड़ता चला जाता है।

यदि एक विवेकशील व्यक्ति चाहे तो अपने अहंकार को मिटा सकता है उस पर नियंत्रण कर सकता है, इससे पूर्व उन्हें यह स्वीकार करना होगा कि वह दम्भ में रहता है जब तक गलती स्वीकार नहीं की जाए उसमें सुधार की गुंजाइश न के बराबर होती हैं, अतः खुले हृदय से अपने अहं भाव को स्वीकार करिये तथा भविष्य में उसके दोहरान से बचने का प्रयास करे तो निश्चय ही हम अहंकार रूपी रावण से बच सकते हैं, हमारे हिन्दू धर्म ग्रंथों में कहा गया है क्षमा परमो धर्मः, अतः हमें उस इंसान से क्षमा मांग लेनी चाहिए जिसको हमारे अहं भाव के कारण पीड़ा पहुंची हो।

विनम्रता व्यक्तित्व का गहना होती है इसकी शुरूआत अहंकार के अंत से ही होती है जीवन में शांति और आनंद के अनुभव तभी पाए जा सकते हैं जब हम विनम्र हों। हमें विनम्रता के आभूषण का वरण कर अपनी आंतरिक असीम शक्ति को जागृत करना होगा यदि हम ऐसा कर पाते हैं तो निश्चय ही समस्त तरह के मानसिक मनोविकारों से भी स्वयं को बचा सकते हैं तथा अपने खुशहाल जीवन की नीव रख सकते हैं।

*****

वृद्ध आश्रम में कुछ पल

पुष्पेन्द्र सिंह, कनिष्ठ सहायक
एम.एन.एन.आई.टी. इलाहाबाद

आश्रम में रोती है माँ, आश्रम में भूखी है माँ।
पैसा बेटा खूब कमाया, ए.सी. बंगला खूब जुटाया।
पत्नी बेटे के खातिर वो,
माँ को आश्रम छोड़ कर आया।।
धर्म कर्म में बढ़ कर हिस्सा,
बड़ा समाज मन में लिप्सा।
अपना वैभव मान बढ़ाया,
माँ को आश्रम छोड़ कर आया।।
कोई पड़ी है खाट पर, कोई रोये टाट पर।
कितने दिन से कुछ ना खाया,
माँ को आश्रम छोड़ कर आया।।
कड़क ठण्ड पेशाब पुत्र के,
खूब सजाया ख्वाब पुत्र के।
सोहर गाया नाच कराया,
माँ को आश्रम छोड़ कर आया।।
आश्रम के खिड़की पर बैठ,
जैसे लकड़ी सूखी ऐंठी।
बड़बड़ करती बेटा आया,
माँ को आश्रम छोड़ कर आया।।
दूध की यारी टूट गई, वो दुखियारी सूख गई।
माँ की नैया पार ना पाया,
माँ को आश्रम छोड़ कर आया।।
तेरे पापा आज जो होते,
शायद ये दुःख साथ ना होते।
इस विपदा को रोक न पाया,
माँ को आश्रम छोड़ कर आया।।
धरती रोये अंबर रोये, माँ के आंसू कोई ना धोये।
बड़े भाग्य से बेटा पाया,
माँ को आश्रम छोड़ कर आया।।
जिसने जीवन हमको दिया,
उसको पानी तक ना दिया।
ये कैसे संस्कार की छाया,
माँ को आश्रम छोड़ कर आया।।
आश्रम में रोती है माँ।
आश्रम में भूखी है माँ।

इंदिरा सिंह
पी.जी.टी. (हिन्दी), के.वी., न्यू कैंट, प्रयागराज

माँ एक सुखद अनुभूति है
वह एक शीतल आवरण है
हम दुनिया के अंग है
तो वह पूरी दुनिया है
हमारे जीवन की आशा है
वह विश्वास है
हम एक शब्द है
तो वह पूरी परिभाषा है
माँ त्याग है तपस्या है
सेवा है माँ
जीवन में अमृत का प्याला है माँ।
पूजा की थाली है माँ
मंत्रों का जाप है माँ
जीवन के खुशबू में
फूलों का एहसास है माँ
हम एक शब्द है
बस यही माँ की परिभाषा है।

फेसबुक दोस्त (सोशल मीडिया)

वीरेन्द्र प्रसाद, स्नातक शिक्षक (हिन्दी)
के.वी., सी.आर.सी.एफ. फाफामऊ

अभय एक सीधा–सीधा लड़का था। ग्रेजुएशन की पढ़ाई करने के लिए अब उसे अपना गॉव छोड़कर शहर में दाखिला लेना था। किसान पिता ने एक–एक पैसा जोड़कर अभय के लिए शहर में सारी व्यवस्था कर दी और ये सोचकर एक स्मार्ट फोन भी दिला दिया कि ऑनलाइन पढ़ाई करने में इसका उपयोग होगा।

स्वभाव में अंतर्मुखी अभय को अब अपने सपनों को पूरा करने के लिए बहुत मेहनत करनी थी। अपने संकोची स्वभाव के कारण वह शहर के बच्चों के साथ उतना घुल–मिल नहीं पाया और दोस्त बनाने के लिए उसने सोशल मीडिया का सहारा लिया। ऐसे ही फेसबुक पर उसी शहर के मयंक नाम के एक लड़के से उसकी दोस्ती हो गई। मयंक का प्रोफाइल अभय को बहुत पसंद आया था। दोनों के बीच मैसेजेस का आदान–प्रदान होना शुरू हो गया।

पढ़ाई के लिए लिए गए फोन का प्रयोग अब दोस्ती और मनोरंजन वीडियोस देखने में होने लगा। यहॉ तक की क्लास करते हुए भी अभय का ध्यान मोबाइल स्क्रीन पर ही लगा रहता।

मयंक और अभय की दोस्ती भी गहरी होती गयी, यहॉ तक की मयंक कई बार उसका फोन भी रिचार्ज करा देता।

देखते– देखते उनकी फ्रैंडशिप को दो–तीन महीने बीत गए, पर अभी भी उनकी एक बार भी मुलाकात नहीं हुई थी। फिर एक दिन मयंक ने अभय को एक जगह बुलाने के लिए कॉल की, ''यार एक बहुत अच्छी Opportunity है, तू सुबह दस बजे Whatsapp किये पते पर आ जा, अब पढ़ाई के साथ–साथ तू हर महीने 5000 रूपये भी कमा सकता है, और इसी बहाने हम दोनों पहली बार face to face मिल भी लेंगे''।

अभय की खुशी का ठिकाना नहीं था, दोस्त से मिलने की खुशी और पैसा कमाने का अवसर मिलने की बात से वो फूला नहीं समा रहा था। अगले दिन वह सुबह जल्दी उठा और तैयार होकर मयंक के दिए पते की ओर बढ़ गया। वह जगह शहर से कुछ दूर पर थी, इसलिए अभय उधर जा रही एक बस पर सवार हो गया। एक घंटे के सफर के बाद आखिरकार वह पूछते–पूछते दिए हुए पते पर पहुंचा।

अभी वह दरवाजा खटखटाता की इससे पहले एक कार उसके पास आकर रुकी। उसमें से पैतालिस–पचास साल का एक अधेड़ व्यक्ति बाहर निकला और बोला, ''सुनो बेटा क्या तुम्हारा नाम अभय है?

''जी अंकल'', अभय बोला।

''मुझे मयंक ने भेजा है, दरअसल, अचानक मीटिंग का स्थान बदल गया है, आओ कार में बैठो मैं तुम्हें सही जगह ले चलता हूँ।'', व्यक्ति बोला।

अभय फौरन कार में बैठ गया और वे आगे बढ़ गए।

व्यक्ति ने अभय को केयर करते हुए उसे पीने के लिए फ्रूटी दी।

फ्रूटी पीने के करीब तीन घंटे बाद जब अभय की ऑखें खुली तो उसने खुद को एक पार्क में लेटा हुआ पाया, उसे पेट के एक तरफ काफी दर्द महसूस हो रहा था, मोबाइल और पैसा भी गायब थे।

कुछ देर तक तो उसे समझ ही नहीं आया कि वो आखिर कार से यहॉ कैसे पहुँच गया। फिर उसने शर्ट उठा कर दर्द वाली जगह देखी तो वहां एक चीरा लगा हुआ था।

अभय का दिल तेजी से धड़कने लगा। वह समझ चुका था कि उसके साथ कुछ बहुत गलत हो चुका है।

वह फौरन भाग कर डॉक्टर के पास गया।

पर डॉक्टर ने जो बात उसे बताई, उसे सुनकर उसके पैरों तले जमीन ही खिसक गई। उसके शरीर से एक किडनी गायब थी। अब उसकी ''काटो तो खून नहीं'' वाली हालत हो गई।

सोचने लगा, ''क्या सपने लेकर गांव से शहर आया था। अब अपने पिताजी को क्या जवाब देगा।''

वह भागा–भागा पुलिस के थाने पहुंचा। वहां जाकर तो उसके सामने डिजिटल दुनिया की सारी सच्चाई सामने आ गई। यह जो फेसबुक पर मयंक का प्रोफाइल था वह कोई युवा नहीं बल्कि वही अधेड़ व्यक्ति था जिसने उसे कार में बैठाया था।

वह आकर्षक अकाउंट बनाकर अभय जेसे लोगों को, जो सफलता शॉर्टकट में चाहते थे और ऐसे छलावे पे विश्वास करते थे, फांसता था। फिर धीरे–धीरे पर्सनल लाइफ में घुसकर उन्हें नौकरी का झांसा देकर बुलाता। उसके बाद शरीर के अंगों की चोरी करता था। ऐसे कितने सारे cases उसके नाम थे।

सोशल मीडिया पर सोशल न होकर अगर अभय वास्तविक दुनिया में सोशल होता तो शायद ऐसी नौबत ही नहीं आती। स्क्रीन के पीछे का सच अब आईने की तरह साफ हो चुका था। इतनी बड़ी ठोकर लगने के बाद उसने मोबाइल स्क्रीन पर अपना समय गवाना बंद कर दिया। वास्तविक और आभासी दुनिया के बीच का फर्क अब उसकी समझ में आ चुका था, पर बहुत कुछ खोने के बाद।

दोस्तों, ऑनलाइन वर्ल्ड में किसी पर ऑख मूँद कर विश्वास करना आपको मुसीबत में डाल सकता है। इसलिए सोशल मीडिया और इंटरनेट को प्रयोग पूरी सावधानी के साथ करें ताकि आपको कभी अभय की तरह पछताना न पड़े।

पुष्पेन्द्र सिंह, कनिष्ठ सहायक
एम.एन.एन.आई.टी. इलाहाबाद

किसी व्यक्ति के जीवन के कुछ खास पलों में एक पल वह भी होता है जब उसे अपनी मनचाही जगहों पर घूमने का मौका प्राप्त होता है। अपने भारतवर्ष के अलग–अलग जगहों पर घूमना तथा वहॉ की संस्कृतियों को जीवन के उस पल में उतारना प्रत्येक व्यक्ति का एक सपना होता है। ऐसा ही एक मौका मुझे तब प्राप्त हुआ जब मुझे एक परीक्षा देने के लिए चेन्नई जाने का सौभाग्य मिला। मुझे उस पल की अनुभूति आज भी है जब मुझे पता चला था कि मुझे चेन्नई जाना है।

यात्रा की शुरूआत हुई हमारे करीबी रेलवे स्टेशन अयोध्या से। मेरा मन चेन्नई जाने की सोच से ही उत्साहित हो रहा था। मुझे एक ऐसी संस्कृति की झलक दिखने वाली थी जिसकी भाषा विश्व की प्राचीनतम भाषाओं में से एक है और जिस जगह ने भारत को प्राचीनकाल से ही एक अलग पहचान प्रदान की है।

लगभग पचास घंटों के उत्साहपूर्ण सफर का अंत चेन्नई सेंट्रल स्टेशन पर खत्म हुआ और नए पल की शुरूआत हुई। स्टेशन से सीधे मैं होटल गया और वहॉ से सीधे चेन्नई के दिव्य दर्शन के लिए निकल पड़ा। जो सबसे पहली बात वहॉ की मुझे अच्छी लगी वह यह कि वहॉ के लोग न सिर्फ तमिल बोलने में निपुण हैं बल्कि हिन्दी को भी बहुत अच्छे से बोलते और समझते है। अपनी यात्रा के दौरान वहॉ के लोगों का अपनी मातृभाषा के साथ–साथ हिन्दी के प्रति प्रेम देख कर मन मन्त्रमुग्ध हो गया, जो भारत की अखण्डता एवं अक्षुण्णता को स्वप्रमाणित कर रहा था। चेन्नई में मैंने बहुत जगहों पर भ्रमण किया पर जो अनुभव मेरे लिए सबसे अच्छा व खास था, वह था महाबलीपुरम मंदिर का भ्रमण।

समुद्र की सीमा से सटे इस महान एवं ऐतिहासिक जगह पर घूमना मेरे लिए एक सौभाग्य की बात थी। महाबलीपुरम का इतिहास, वहां की कलाकृतियॉ और वहॉं के मंदिरों के बारे में मैंने सिर्फ इतिहास विषय में ही पढ़ा था, वहॉं जाकर उसे अनुभव करना एक अलग ही मनोहारी पल था। जिस समय मैं वहॉ पहुँचा महाबलीपुरम में एक मेला लगा हुआ था और यह मेरे लिए सोने पर सुहागा कहावत को चरितार्थ करने वाला पल था। वहॉ मैं अलग–अलग लोगों से मिला, उनके साथ बैठकर जीवन के एक नए पल को अनुभूत किया।

इसके बाद मैं 'वी0जी0पी0 मरीन किंगडम' गया जहॉ समुद्री जीवन की एक अलग ही छवि प्रस्तुत की गयी थी। वहॉं मैंने जीवन में पहली बार विभिन्न प्रकार की मछलियों एवं समुद्री जीवों को देखा जिनको सिर्फ मैंने चलचित्र के माध्यम से ही देखा था।

चेन्नई में मैंने दैनिक जीवन की भाग दौड़ से अलग एक द्वितीय पक्ष को महसूस किया। वहीं पर मुझे भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मद्रास जाने का सुअवसर प्राप्त हुआ। वह परिसर विगत कई वर्षो से देश का शीर्ष तकनीकी संस्थान होने का गौरव स्वयं ही पुष्टित

कर रहा था। उसके उपरान्त मुझे भारतीय सेना की अधिकारी प्रशिक्षण अकादमी जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वहाँ का अनुशासित माहौल स्वयं में भारतीय शूरवीरों को गढ़ने की कहानी व्यक्त कर रहा था।

चेन्नई जाकर मुझे जीवन का एक नया अनुभव हुआ। वहाँ के लोगों और संस्कृति को देखकर इतिहास के पन्नों में एक नयी रौनक सी आ गयी। वहॉ का खान–पान अव्वल दर्जे का है, जीवन में ऐसा अविस्मरणीय पल बहुत ही कम आता है पर जब भी ऐसा पल मिले हमें खुलकर जीना चाहिए और वहाँ की संस्कृतियों से अपने जीवन में नयी उमंग लानी चाहिए। आखिरकार तीन दिन चेन्नई में बिताने के बाद मैंने घर के लिए प्रस्थान किया। आज भी जब मैं उस यात्रा को याद करता हूँ तो मन मन्त्रमुग्ध हो जाता है।

*****

गुरु-शिष्य

मनीष मिश्र, कनिष्ठ सहायक,
एम.एन.एन.आई.टी इलाहाबाद

गुरु एक फूल है शिष्य उसकी सुगन्ध है।
गुरु एक दीपक है शिष्य उसकी ज्योति है।।
गुरु से शिष्य की कौन सी बात अनजानी है।
सागर को मालूम है बूँद में कितना पानी है।।
सच्चाई के शिखर पर चढ़ता है कोई–कोई।
विनय और नम्रता से पढ़ता है कोई–कोई।।
सोया पड़ा है सारा संसार मोह नींद में।
मंजिल को पाने के लिए बढ़ता है कोई–कोई।।
हिन्दू पूछता है प्रभु का मंदिर कहाँ है।
मुस्लिम पूछता है खुदा की मस्जिद कहाँ है।।
धर्म के ठेकेदारों मुझे इतना बतला दो,
जिसने यह भेद डाला वो काफिर कहाँ है।
आदमी ने वक्त को ललकारा है।
आदमी ने मौत को भी मारा है।।
जीत लिए है सारे लोक इस आदमी ने।
मगर आदमी खुद आदमी से हारा है।।
चौराहे पर आकर अक्सर लोग भटक जाते हैं।
सागर तैरने वाले किनारे पर अटक जाते हैं।।
सत्य कहने का जमाना नहीं रहा।
सत्यवादी हमेशा शूली पर लटक जाते हैं।।

हकीकत

चाहा जिसे वो मिल न सका,
जो मिला हमें उसकी चाहत न थी,
जीता था जिस साज को सुनकर,
आज उसी की आहट न थी,
था सुकून जो मेरे इस मन का,
पास मेरे वो राहत ही न थी,
चमकती थी जो शबनम,
आज उसी में झिलमिलाहट न थी,
खिले रहते थे जो चेहरे,
आज उन्ही पर मुस्कुराहट न थी,
झुक जाती थी जो पलके देख हमें,
आज उन्ही में हया की नजाकत न थी।
थे जिनसे हजारों गिले–शिकवे,
आज उन्ही में कोई शिकायत न थी।
था मेरा जो अपना आज,
उसे अपना कहने की इजाजत न थी,
था क्यों परेशान ये मन जो,
तुम मेरी अमानत ही न थी,
बन जाऊ मै अतीत–ए–मौत,
क्योंकि थी हकीकत जो कल,
आज वो खुद ही हकीकत न थी।

जानिए π (पाई) को

डॉ0 मनोज कुमार यादव, प्रोफेसर 'एच'
हरीशचन्द्र अनुसंधान संस्थान, झूँसी

इस आलेख में अचर संख्या π, जिसे किसी भी वृत्त की परिधि तथा व्यास के अनुपात के रूप में परिभाषित किया जाता है, की उत्पत्ति व क्रमानुसार प्रगति के रोचक तथ्यों का वर्णन किया गया है। इस मायावी संख्या की पूर्ण जानकारी का उल्लेख यहाँ संभव नहीं है, क्योंकि ऐसा करने के लिए किसी भी व्यक्ति के कई वर्षों के कठिन परिश्रम तथा सैकड़ों पृष्ठों की लेखनी भी कम पड़ सकती है।

परिभाषा:

अलग–अलग व्यास वाले दो वृत्त लीजिए। मान लीजिए कि पहले वृत्त का व्यास व परिधि क्रमशः D_1 तथा P_1 है तथा दूसरे वृत्त का व्यास व परिधि क्रमशः D_2 तथा P_2 है।

अब यहाँ प्रश्न उठता है कि क्या $C_1:\frac{P_1}{D_1}$ तथा $C_2:\frac{P_2}{D_2}$ एक दूसरे से सम्बद्ध है?

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि C_1 तथा C_2 दोनों एक समान होते हैं। स्थूल तौर पर हम इसे निम्नलिखित तरीके से सिद्ध कर सकते हैं। कोई दो वृत S_1 तथा S_2 लीजिए जिनका केन्द्र एक समान हो। मान लीजिए कि S_1 की व्यास व परिधि क्रमशः D_1 तथा P_1 है तथा S_2 की व्यास और परिधि क्रमशः D_2 तथा P_2 है। मान लीजिए कि $D_1 < D_2$.

दोनों वृत्तों के अंदर सम n–बहुभुज ($n\geq3$) इस तरह खींचिए कि बहुभुजों के सभी कोने वृत्तों को छुएँ, जहाँ बहुभुज की परिधि P_1 तथा दूसरे बहुभुज की परिधि P_2 है। मान लीजिए कि बहुभुज की किसी एक भुजा के दोनों सिरों को वृत्त के केन्द्र से मिलाने वाली रेखाओं के बीच का कोण θ है। इस प्रकार प्रत्येक बहुभुज को n द्विबाहु त्रिभुजों में बांट सकते हैं। अब आप देखेंगे कि पहले बहुभुज की हर एक त्रिभुज दूसरे बहुभुज की प्रत्येक त्रिभुज के समान (similar) है। जैसा कि उपरोक्त चित्र में दिखाया गया है ΔA_1OA_2 तथा ΔB_1OB_2 समान हैं।

अतः

$$\frac{A_1A_2}{B_1B_2}=\frac{OA_1}{OB_1}\Rightarrow\frac{A_1A_2}{B_1B_2}=\frac{D_1}{D_2}$$

अतः यह सिद्ध होता है कि:

$$\frac{P_1}{P_2}=\frac{D_1}{D_2}\Rightarrow\frac{P_1}{D_1}=\frac{P_2}{D_2}$$

अब जैसे–जैसे n का मान बढ़ाते जाएंगे, बहुभुजों की परिधियाँ क्रमशः वृतों की परिधियों के नजदीक आती जाएँगी। इससे यह सिद्ध होता है कि $C_1=C_2$.

अब हम जान गए हैं कि किसी भी वृत्त की परिधि तथा व्यास का अनुपात हमेशा एक अचर संख्या होता है। परिभाषा :– कोई भी एक वृत्त लीजिए जिसकी परिधि P तथा व्यास D है। तब संख्या $\frac{P}{D}$ को π कहा जाता है।

आज़ादी का अमृत महोत्सव

ऐसा माना जाता है कि π का जन्म लगभग 4000 वर्ष पहले हुआ था। इस तथ्य को मिस्र का दस्तावेज "Rhind Papyrus" सत्यापित करता है, जिसकी खोज 1855 ई. में हुई। लेकिन π का का प्रचलित नाम यूलर ने दिया जिनका जीवनकाल वर्ष 1707–1783 ई. था।

π के विकास के कई चरण हुए जिन्हें विभिन्न भागों में विभाजित किया जा सकता है:

प्रारंभिक काल:

वृत्त का क्षेत्रफल–एक वृत्त S लीजिए जिसका अर्द्धव्यास r है। वृत्त S के क्षेत्रफल का माप πr^2 होता है। इस तथ्य को हम स्थूल तौर पर निम्नलिखित तरीके से सिद्ध कर सकते हैं।

वृत्त के केन्द्र से चारों ओर समान माप के छोटे–छोटे केकनुमा टुकड़ों को इस तरह व्यवस्थित करें कि एक समानांतर चतुर्भुज का आकार लेगी। अब इस आकृति को छूती हुई एक समानांतर चतुर्भुज खींचे, आप देखेंगे कि इस समानांतर चतुर्भुज की ऊँचाई लगभग r है तथा लंबाई लगभग $\frac{P}{2}$ है, जहाँ p वृत्त की परिधि है। इस समानांतर चतुर्भुज का क्षेत्रफल लगभग $r\times\frac{P}{2}$ होगा, जो कि लगभग वृत्त के क्षेत्रफल के बराबर है।

अतः वृत्त का क्षेत्रफल $= r\times\frac{P}{2} = ?\frac{P}{2r}? \, r^2 = \pi r^2$

ऑक्टागोन विधि:

ऐसा माना जाता है कि लगभग 4000 वर्ष पूर्व, शायद पहली बार, ऑक्टागोन विधि से π का मान निकाला गया था, जिसका वर्णन निम्न प्रकार से किया जा सकता है। दिए हुए वृत्त को 3×3 ग्रिड से ढ़क दीजिए तथा निम्न अष्टभुज को देखिए:

अब अष्टभुज का क्षेत्रफल, जो कि वृत्त के क्षेत्रफल के लगभग बराबर है, 63 यूनिट है।

इसलिए, वृत्त का क्षेत्रफल $\cong 63 = \pi r^2 = \pi ?\frac{9}{2}?^2$,

क्योंकि $r = \frac{9}{2}$ है।

अतः $\pi \; ? \; ?\frac{63}{81}? \; ? \; 4?\frac{63}{81}? = ?\frac{16}{9}?^2 \; ? \; 3.1605$

हालांकि π का यह मान बहुत अच्छा नहीं था लेकिन एक बहुत अच्छी शुरूआत थी।

नियमित बहुभुज विधि (Regular polygon method)- (आर्किमिडीज (287–212 ई.पू.)

एक यूनिट त्रिज्या का एक वृत्त लीजिए। इस वृत को परिधिकृत करते हुए एक सम 6×2^n – बहुभुज खीचिए। माना कि $\theta = ?\frac{\angle aob}{2}?$, जहाँ त्रिकोण Δaob को वृत्त के केन्द्र से बहुभुज की किसी एक भुजा के दोनों सिरों से जोड़कर बनाया गया है।

अतः बहुभुज की प्रत्येक भुजा का माप $2\times\tan\theta$ है तथा इस बहुभुज का अर्ध परिमाप $a_n = 3\times2^{n+1}\tan\theta$ है। अब यह देखना आसान होगा कि $a_{n+1} = 3\times2^{n+2}\tan\theta/2$.

इसी तरह से अब एक सम 6×2^n – बहुभुज खीचिए जिसे वही एक यूनिट त्रिज्या वाला वृत्त परिधिकृत करें। इस बहुभुज का अर्ध परिमाप $b_n = 3\times2^{n+1}\sin\theta$ है, जहाँ θ उपरोक्त विधि से ही लिया गया है।

आज़ादी का अमृत महोत्सव

आप देखेंगे कि $b_{n+1} = 3\times2^{n+2} \sin\theta/2$ होगा। आप आसानी से देख सकते हैं $a_o = 2?\overline{3}$ तथा $a_o = 3$ है।

यह जानना अब बहुत रूचिकर है कि दोनों श्रृंखलाएँ तथा एक ही संख्या, जो कि यहाँ पर π है, पर अभिमुख है। अतः $b_n < \pi < a_n$

अब n=4 के लिए यह सिद्ध करना बहुत आसान है कि

$$3.1413031 < \pi < 3.142715$$

अतः हमें $\pi = 3.14$ मिलता है जो कि विद्यालयों में छात्र–छात्राओं को बताया जाता है। जू चोंगझी (429–500 ई.) ने सम 6×2^{13}– बहुभुज का प्रयोग करके π का मान 3.14159265 निकाला।

आर्कटेन विधि – जेम्स ग्रेगरी ;1638–1671 ई.)

जेम्स ग्रेगरी ने निम्न आर्कटेन्जेंट श्रृंखला खोजी

$$\tan^{-1}(n) = n - \frac{n^2}{3} + \frac{n^5}{5} + \frac{n^7}{7} + \ldots\ldots\ldots$$

इस समीकरण में यदि हम $n = 1$ रखें तो,

$$\frac{x}{4} = 1\frac{1}{3} + \frac{1}{5} + \frac{1}{5} + \frac{1}{7} + ?$$

अतः हम π का मान निकाल सकते हैं। लेकिन यह श्रृंखला बहुत धीमी गति से अभिसरित (कन्वर्ज) होती है।

आइजेक न्यूटन (1642–1727) ने निम्न संबंधित श्रृंखला की खोज की –

$$\sin^{-1}(n) = n - \frac{1}{2}\times\frac{n^2}{3} + \frac{1}{2}\times\frac{3n^5}{4\times5} + \ldots\ldots\ldots$$

यदि हम $n = \frac{1}{2}$ रखें तो प्राप्त होगा–

$$\frac{\pi}{6} = \frac{1}{2} + \frac{1}{2}\times\frac{1}{3\times2^2} + \frac{1}{2}\times\frac{3}{4}\times\frac{1}{5\times2^5} + ?$$

यह श्रृंखला बहुत तेज गति से अभिसरित (कन्वर्ज) होती है।

जैसा कि ऊपर बताया गया है π का नामकरण यूलर (1707–1783) ने किया था। जिन्होंने निम्नलिखित श्रृंखला का प्रयोग करके एक घंटे में π का 20 दशमलव अंकों तक सही मान निकाला था।

$$\frac{\pi}{6} = 5\tan^{-1}?\frac{1}{7}? + 2\tan^{-1}?\frac{3}{7a}?$$

उन्होंने इस तरह की कई श्रृंखलाएँ निकाली थी। इसके बाद आर्कटेंजेट विधि का प्रयोग करके π के और अधिक दशमलव अंकों तक मान निकाले गये। इम यहाँ क्रमवार कुछ उदाहरण दे रहे हैं–

1. 1706 ई. में जॉन मेकिन–100 दशमलव अंकों तक।
2. 1710 ई. में थॉमस फेन्टेट डी लैग्नी–112 दशमलव अंकों तक।
3. 1794 ई. में जूरिज वेगा – 140 दशमलव अंकों तक।
4. 1884 ई. में जकारिस डेस – 200 दशमलव अंकों तक।
5. 1847 ई. में थॉमस क्लॉसेन – 248 दशमलव अंकों तक।

आज़ादी का अमृत महोत्सव

6. 1853 ई. में विलियम रदरफोर्ड – 440 दशमलव अंकों तक।

7. 1876 ई. में विलियम शैंक्स – 527 दशमलव अंकों तक।

कंप्यूटर के योगदान से π का मान –

वर्ष 1947 ई. में फर्गुसन ने मैकेनिकल कैलकुलेटर का प्रयोग करके π का 710 दशमलव अंकों तक सही मान निकाला। इसके बाद विभिन्न विद्वानों ने कंप्यूटर का प्रयोग करके π का मान निकाला। इनमें से कुछ चुनिंदा विद्वानों के नाम तथा उनके द्वारा निकाला गया π का मान इस प्रकार है:

1. 1961 ई. में शैन्क्स एवं रैंच ने 100000 दशमलव अंकों तक।
2. 2002 में यासुमासा केनेदा तथा उनके सहयोगियों ने 1,241,100,000000 दशमलव अंकों तक।
3. 2009 ई. में फैब्रिस बेलार्ड ने 2,699,999,990,000 दशमलव अंकों तक।
4. 2013 ई. में शिगेरू कोंदो तथा एलेक्जेंद्र यी ने 12,100,000,000,050 दशमलव अंकों तक।
5. 2014 ई. में हॉकाउन्ची ने 13,300,000,000,000 दशमलव अंकों तक।

ऐसा माना जाता है कि अकिरा हारागुची ने 2006 में एक प्रदर्शन के दौरान π के 1,11,700 अंकों की अपनी याददाश्त से सुनाया। लेकिन, गीनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड ने इसे मान्यता नहीं दी है। *http://www. Quinnessworldrecords .com/world-records/most-pi-places-memorised* पर दिया गया है कि भारत के राजीव मीना ने 21 मार्च, 2015 को π के 70,000 अंकों को अपनी याददाश्त से सुनाया। अधिक जानकारी के लिए *www.pi-world-ranking-list.com* वेवसाइट का अवलोकन किया जा सकता है जहाँ 873 तक की रैंकिंग दी गई है।

इस आलेख में तथ्यों को क्रमवार प्रस्तुत करने के अलावा लेखक का कोई योगदान नहीं है। सभी तथ्य इंटरनेट पर उपलब्ध विभिन्न स्रोतों से लिए गये हैं।

*****

"राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की शीघ्र उन्नति के लिये आवश्यक है।"

–महात्मा गांधी

सदस्य कार्यालय की सूची

1. मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान इलाहाबाद, प्रयागराज
2. भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान, देवघाट, झलवा, प्रयागराज।
3. राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी,5, लाजपत राय मार्ग, प्रयागराज।
4. इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद, प्रयागराज।
5. केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, गंगानाथ झा परिसर, चन्द्र शेखर आजाद पार्क, प्रयागराज
6. क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान, 20, सरोजिनी नायडू मार्ग, प्रयागराज।
7. राष्ट्रीय कौशल प्रशिक्षण संस्थान (महिला), 6, नया कटरा रोड, प्रयागराज
8. दत्तोपंत ठेगड़ी राष्ट्रीय श्रमिक शिक्षा एवं विकास बोर्ड, 106, डॉ. सूर मार्ग, टैगोर टाउन, प्रयागराज
9. राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान, 19-17, कस्तूरबा गांधी मार्ग, प्रयागराज।
10. केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, 35-बी, एम.जी. मार्ग, सिविल लाइन्स, प्रयागराज।
11. जवाहर नवोदय विद्यालय, मेजा-खास, प्रयागराज
12. केन्द्रीय विद्यालय, आई. आई. आई. टी. झलवा, प्रयागराज
13. केन्द्रीय विद्यालय नैनी, प्रयागराज।
14. केन्द्रीय विद्यालय मनौरी, ए.एफ.एस., मनौरी, प्रयागराज।
15. केन्द्रीय विद्यालय, ओल्ड कैंट, तेलियरगंज, प्रयागराज।
16. केन्द्रीय विद्यालय, सी ओ डी, छिवकी, प्रयागराज।
17. केन्द्रीय विद्यालय, सी आर पी एफ, फाफामऊ, प्रयागराज
18. केन्द्रीय विद्यालय, ए एफ एस, बमरौली, प्रयागराज
19. केन्द्रीय विद्यालय, न्यू कैंट, प्रयागराज- प्रथम पाली
20. केन्द्रीय विद्यालय, न्यू कैंट, प्रयागराज- द्वितीय पाली
21. उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, 14, सी एस पी सिंह मार्ग, प्रयागराज
22. इलाहाबाद संग्रहालय, चन्द्र शेखर आजाद पार्क, प्रयागराज
23. कर्मचारी चयन आयोग मध्य क्षेत्र, केन्द्रीय सदन, 35ए, एम.जी.मार्ग, प्रयागराज
24. केन्द्र सरकार स्वास्थ्य योजना, दूसरा तल, संगम प्लेस, प्रयागराज
25. दूरदर्शन केन्द्र, इलाहाबाद, लाजपत राय मार्ग, ममफोर्डगंज, प्रयागराज
26. आकाशवाणी, 7-9 दयानन्द मार्ग, प्रयागराज।
27. भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण संगठन, 10 चैथम लाइन, प्रयागराज।
28. भारतीय भू-चुम्बकत्व संस्थान, कनिहार, झूंसी, प्रयागराज।
29. पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र, 3-1, लाजपत राय रोड, नया कटरा, प्रयागराज
30. केन्द्रीय भू-जल बोर्ड, चकिया, प्रयागराज।
31. सूक्ष्म लघु मध्यम उद्यम विकास संस्थान, 17-18, उद्योग नगर, नैनी, प्रयागराज।
32. केंद्रीय संचार ब्यूरो, फील्ड कार्यालय, 28ए-1, स्टेनली रोड, प्रयागराज।
33. प्रधान नि0लेखा परीक्षा, जी एम कार्या. परिसर, उ0म0रे0, सुबेदारगंज, प्रयागराज।
34. हरीशचन्द्र अनुसंधान संस्थान, छतनागरोड, झूंसी, प्रयागराज
35. केन्द्रीय विद्यालय, इफको, फूलपुर, प्रयागराज

प्रयागराज के प्रमुख दर्शनीय स्थल

आनन्द भवन

इलाहाबाद में स्थित नेहरू-गाँधी परिवार का पूर्व आवास है जो अब एक संग्रहालय के रूप में है। पुराने आनंद भवन का नाम स्वराज भवन कर दिया गया। इस नए आवास को आनंद भवन कहा जाने लगा।

हनुमान मंदिर

संगम नगरी में इन्हें बड़े हनुमानजी के नाम से जाना जाता है। यहां जमीन से नीचे हनुमानजी की मूर्ति लेटे हुए अवस्था मे है तथा हनुमान जी अपनी एक भुजा से अहिरावण और दूसरी भुजा से दूसरे राक्षस को दबाये हुए अवस्था में हैं। यह एकमात्र मंदिर है जिसमें हनुमान जी लेटी हुई मुद्रा में हैं।

किला

इलाहाबाद में संगम के निकट स्थित इस किले को मुगल सम्राट अकबर ने 1583 में बनवाया था। वर्तमान में इस किले का कुछ ही भाग पर्यटकों के लिए खुला रहता है। बाकी हिस्से का प्रयोग भारतीय सेना करती है।

चन्द्रशेखर आजाद पार्क

चन्द्रशेखर आजाद पार्क, प्रयागराज स्थित यह पार्क महान स्वतंत्रता सेनानी चन्द्रशेखर आजाद को समर्पित है, जिन्होंने अंग्रेजी सेना से लड़ते हुए अपने प्राणों की आहुति दे दी। अमर शहीद के सम्मान मे पार्क में उनकी मूर्ति स्थापित है।

. शंकर विमान मंडपम

यह एक धार्मिक स्थल है, जहां कई हिन्दू मूर्तियां रखी हुई हैं। 130 फीट ऊंचे इस भवन में कुमारिल भट्ट, जगतगुरू शंकराचार्य और कामाक्षी देवी की प्रतिमा रखी गई है। त्रिवेणी के पास स्थित इस मंडपम के बारे में माना जाता है कि यह एक शक्तिपीठ है।

इलाहाबाद हाईकोर्ट

इलाहाबाद उच्च न्यायालय मूल रूप से ब्रिटिश राज में भारतीय उच्च न्यायालय अधिनियम 1861 के अन्तर्गत आगरा में 17 मार्च 1866 को स्थापित किया गया था। सन् 1869 में इसे आगरा से इलाहाबाद स्थानान्तरित किया गया। 11 मार्च 1919 को इसका नाम बदल कर इलाहाबाद उच्च न्यायालय रख दिया गया

इलाहाबाद विश्वविद्यालय

यह आधुनिक भारत के सबसे पहले विश्वविद्यालयों में से एक है। इसे पूर्व के आक्सफोर्ड नाम से जाना जाता है। इसकी स्थापना सन् 1887 ई को एल्फ्रेड लायर की प्रेरणा से हुयी थी।

खुसरो बाग

प्रयागराज स्थित इस विशाल बाग में खुसरो, उसकी बहन और उसकी राजपूत मां का मकबरा स्थित है। खुसरो सम्राट जहांगीर के सबसे बड़े पुत्र थे। इस पार्क का संबंध भारत के स्वतंत्रता संग्राम से भी है।

Designed by V-computers

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्या0-2), प्रयागराज
मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान इलाहाबाद
प्रयागराज-211004